॥ श्रीः ॥

अथ

बालसंस्कृतप्रभाकरः ।

गार्ग्यकुलोत्पन्नेन केशवभट्टात्मजेन

प्रभाकरशास्त्री-

तिसमाख्येन सूरिणा संकलितः ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णुना

निजे "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये

संमुद्य प्रकाशितः ।

तृतीयावृत्तिः ।

कल्याण-मुंबई.

...१९६३, शके १८२८.

॥ श्रीः ॥

अथ

बालसंस्कृतप्रभाकरः।

गार्ग्यकुलोत्पन्नेन केशवभट्टात्मजेन

प्रभाकरशास्त्री-

तिसमाख्येन सूरिणा संकलितः

तत्

श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णुना

नैजे "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये

संमुद्य प्रकाशितः।

तृतीयावृत्तिः।

कल्याण-मुंबई.

संवत् १९६३, शके १८२८.

प्रस्तावना.

विद्यार्थी और पाठकगण !

आज कल संस्कृत सीखनेवाले विद्यार्थियोंके उपयोगी परंतु बहुतही श्रमदायक जो ग्रंथ प्रसिद्ध हुए हैं, उनके पढनेसे बहुतही श्रम होता है, परंतु तादृक् फल नहीं होता, यह सोच यह बालसंस्कृतप्रभाकर पुस्तक तैयार हुआ है. इसके पढनेसे श्रम तो बहुत नहीं और फल तो बहुतही होगा तथा नये निकले हुए संस्कृत सीखनेके उपयोगी ग्रंथ गतार्थ होंगे ऐसा विद्वानोंका मत है। इस ग्रंथमें प्रथमतः व्याकरणकी सबही उपयुक्त बातें लिखकर आगे व्यवहारके उपयोगी गंभीर २ संस्कृत शब्द और ज्योतिष धर्मशास्त्र सुभाषित आदि बहुत उपयुक्त विषयोंसे परिपूर्ण संस्कृत वाक्यावलि और उसके सामने शुद्ध हिंदीवाक्योंसे अर्थ लिखा गया है। जिनसे उपयुक्त सबही विषयोंमें संस्कृत बोलनेमें तथा भाषांतर करनेमें नैपुण्य प्राप्त होगा, सो विद्यार्थियोंने अनुभवसे निश्चय करना ! औरभी विद्वानोंके पास प्रार्थना है कि, इसमें जो कुछ अशुद्ध होय वह कृपा करके कहना, चतुर्थावृत्तिमें सुधारा जायगा, सुगमताके अर्थ सब संधि नहीं किये गये इति शम्।

प्रकाशकः—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास.

संमतिः।

अन्वर्थसंज्ञकं बालसंस्कृतप्रभाकराभिधमिदं पुस्तकं हिंदीभाषापरिचितेभ्यः संस्कृतभाषाजिज्ञासुभ्यो बालेभ्यो गीर्वाणवाग्देवीद्वारमार्गदर्शनं त्वरितमेवाल्पायासेन दास्यतीति मे भाति. शम्.

हरिपुरन्यायपाठशालाध्यापकस्तैलंगान्वयो—

बाळशास्त्री.

मैं जानता हूं कि यह "बालसंस्कृतप्रभाकर" नामक पुस्तक संस्कृत सीखनेवालोंको बडाही लाभदायक होगा.

गणेश काशीनाथ काळे.

I have gone through this book (*Balsanskritprabhakar*) carefully and I think it will be a valuable assistance to the beginners of Sanskrit.

July 1/7/95. N. V. SOHONI.

अथ

बालसंस्कृतप्रभाकरस्थविषयाणामनुक्रमणिका.

इति अनुक्रमणिका समाप्ता.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना. कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

बालसंस्कृतप्रभाकरः ।
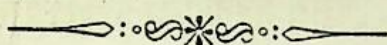
ध्यायाम्यहं परब्रह्म महो हरिहरात्मकम् ।
यत्कृपालवतो धीराः प्रख्यातिं यान्त्यहर्निशम् ॥
वेंकटाख्यं ज्ञानगुरुं यशोदां जननीं तथा ।
केशवं पितरं रामं भ्रातरं प्रणमाम्यहम् ॥
तनोति गर्गान्वयजः प्रभाकरसमाभिधः ।
बालबोधाय सुगमं संस्कृतस्य प्रभाकरम् ॥

शिक्षाविचार.

बालसंस्कृतप्रभाकर नामक यह ग्रंथ पढनेवालोंको प्रथम शब्दरूपावलि, धातुरूपावलि और समासचक्र ये तीनों छोटेसे ग्रंथ अवश्य पढना चाहिये। ये तीनों ग्रंथ सुखसे तैयार कर उनमें जो शब्द और धातु चलाकर दिखाये हैं उनके सरीखे औरभी शब्द तथा धातुओंके रूप चलानेका प्रयत्न करे। इस प्रकार समासचक्रमें जो समास कहे हैं उनका लक्षण भेद आदिका अर्थ गुरुसे अच्छी तरह जानकर औरभी समास छुडानेका प्रयत्न करे। जहां संशय होवे तहां गुरुको पूंछे।

अध्यापकको चाहिये कि प्रथम ऊपरके तीनों ग्रंथ शुद्धतापूर्वक विद्यार्थियोंको पढावे और पढानेमें शब्दोंके अंतवर्ण,

लिंग, वचन, विभक्ति तथा क्रियापदोंका लकार, काल, पुरुष, वचन और समासोंके भेद, उदाहरण आदि समझा देवे; और पूंछे। इसी तरह अन्य शब्द, धातु चला लेवे। तथा अन्य समासभी पूंछे। जिससे पढनेवालोंका अभ्यास दृढ हो जाय। इस ग्रंथमें कहे हुए नियम और वाक्य उक्तरीतिसे समझा देकर मुखसे तैयार करा लेवे। कारक—कर्ता, कर्म आदि और प्रयोग-अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक, कर्तरि, कर्मणि, भावे तथा नाम, सर्वनाम आदि सब वारंवार पूंछे और कहे। संस्कृतका प्राकृत वाक्य और प्राकृतका संस्कृत वाक्य बना लेवे। जिससे विद्यार्थी संस्कृत बोलनेमें चतुर हो जाय।

विभक्तिविचार.

संस्कृतमें विभक्तियां सात (७) हैं। और प्रत्येक विभक्तिके प्रत्यय तीन तीन हैं। उन प्रत्ययोंकी संज्ञाभी तीन हैं। यथा—

	संस्कृत.			हिंदी.
विभक्ति.	एकव०	द्विव०	बहुव०	एक० द्वि० बहु०
प्रथमा	स्	औ	अस्	०, ने[1].
द्वितीया	अम्	औ	अस्	को.
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्	से.
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्	को.
पंचमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्	से.
षष्ठी	अस्	ओस्	आम्	का, के, की.
सप्तमी	इ	ओस्	सु	में, पै, पर.

१ यह विशेष ध्यानमें रखना चाहिये कि, हिंदीमें तीनों वचनोंका एकही प्रत्यय है। परंतु द्विवचन या बहुवचनकी विवक्षासे प्रत्य-

ये सात (७) विभक्तियां कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ये छः कारक और संबंध तथा संबोधन इन अर्थोंमें होती हैं । यथा—

कर्ता	प्रथमा, तृतीया, षष्ठी.	संप्रदान	चतुर्थी.
संबोधन	प्रथमा.	अपादान	पंचमी.
कर्म	प्रथमा, द्वितीया, षष्ठी.	संबंध	षष्ठी.
करण	तृतीया.	अधिकरण	सप्तमी.

उदाहरणार्थ अकारांत पुँल्लिंगी रामशब्द.

संस्कृत.

विभक्ति.	एकव०	द्विवचन.	बहुवचन.
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
सं०प्र०	(हे) राम	(हे) रामौ	(हे) रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु

हिंदी.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन–बहुवचन.
प्रथमा	राम, (वा) रामने,	राम (वा) रामोंने

यका प्रयोग करनेपर प्रायः प्रकृतिके अंतमें विकार हो जाता है । और प्रथमाके 'ने' प्रत्ययका संबंध भूतकालके सकर्मक क्रियापदपरही हो सकता है अन्यत्र नहीं । यथा–पंडितने पोथी लिखी ।

१ हिंदीमें द्विवचन बहुवचनका रूप एकही है ।

सं०प्र०	(हे) राम	(हे) रामो
द्वितीया	रामको	रामोंको
तृतीया	रामसे	रामोंसे
चतुर्थी	रामको	रामोंको
पंचमी	रामसे	रामोंसे
षष्ठी	रामका-के-की	रामोंका-के-की
सप्तमी	राममें-पै-पर	रामोंमें-पै-पर

इस प्रकार और शब्दोंकाभी अर्थ जानना। जिस शब्दका अर्थ और लिंग समझमें न आवे, तिस शब्दका अर्थ, लिंग कोष आदि साधनोंसे तथा गुरुसेभी जान लेना।

दकारांत पुँल्लिंगी 'तद्'[1] (वह) शब्द. (प्रथमपुरुष)

संस्कृत.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

---

१ जहां 'यद्' शब्दका संबंधी 'तद्' शब्द आता है, तहां 'तद्' शब्दका अर्थ प्रायः 'सो' ऐसा होता है। यथा– 'जो आया सो गया'। अन्यत्र 'वह' ऐसा अर्थ जानना। और यह विशेष है कि, 'तद्' (वह) आदि कई सर्वनामोंका संबोधनमें प्रयोग नहीं होता।

हिंदी.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन-बहुवचन.
प्रथमा	वह, उसने	वे, उनने, उन्होंने
द्वितीया	उसको, उसे	उनको, उन्हें, उन्होंको
तृतीया	उससे	उनसे, उन्होंसे
चतुर्थी	उसको, उसे	उनको, उन्हें, उन्होंको
पंचमी	उससे	उनसे, उन्होंसे
षष्ठी	उसका-के-की	उनका-के-की, उन्होंका-के-की
सप्तमी	उसमें-पै-पर	उनमें-पै-पर वा उन्होंमें पै-पर

दकारांत त्रिलिंग 'युष्मद्' (तू) शब्द. (मध्यमपुरुष)

संस्कृत.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

हिंदी.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन-बहुवचन.
प्रथमा	तू, तूने	तुम, तुमने, तुम्होंने
द्वितीया	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें, तुम्होंको
तृतीया	तुझसे	तुमसे, तुम्होंसे
चतुर्थी	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें, तुम्होंको
पंचमी	तुझसे	तुमसे, तुम्होंसे

षष्ठी	तेरा-रे-री	तुम्हारा-रे-री
सप्तमी	तुझमें-पै-पर	तुममें-पै-पर, तुम्होंमें-पै-पर

दकारांत त्रिलिंग 'अस्मद्' (मैं) शब्द. (उत्तमपुरुष)

संस्कृत.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्यां, नौ	अस्मभ्यं, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकं, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

हिंदी.

विभक्ति.	एकवचन.	द्विवचन—बहुवचन.
प्रथमा	मैं, मैंने	हम, हमने, हमोंने
द्वितीया	मुझको, मुझे	हमको, हमोंको, हमें
तृतीया	मुझसे	हमसे, हमोंसे
चतुर्थी	मुझको, मुझे	हमको, हमोंको, हमें
पंचमी	मुझसे	हमसे, हमोंसे
षष्ठी	मेरा-रे-री	हमारा-रे-री
सप्तमी	मुझमें-पै-पर	हममें-पै-पर

विभक्त्यर्थभाषाव्यवहार.

संस्कृत विभक्तियोंके अर्थका सामान्य व्यवहार भाषामें किस प्रकार होता है यह प्रथम सीखनेवालोंको संक्षेपसे और अत्यंत सुगमतासे समझनेके लिये 'वह' शब्दसे दिखाया जाता है.

विभक्ति. एकवचन.	द्विवचन. बहुवचन.
प्रथमा–वह.	वे.
द्वितीया–उसे, उसको, उसतक.	उन्हें, उनको, उनतक.
तृतीया–उससे, उसकरके, उस हेतुसे, उसके हेतुसे, उस कारण, उसके कारण, उस द्वारा, उसके द्वारा, उसके जरिये.	उनसे, उन करके, उन हेतुसे, उनके हेतुसे, उन कारण, उनके कारण, उन द्वारा, उनके द्वारा, उनके जरिये.
चतुर्थी–उसको, उसके वास्ते, उसके लिये, उसके अर्थ, उसके निमित्त, उसके खातिर.	उन्हें, उनके वास्ते, उनके लिये, उनके अर्थ, उनके निमित्त, उनके खातिर.
पंचमी–उससे, उसकी अपेक्षा, उस हेतुसे, उसके हेतुसे, उसकी बनिस्वत, उसतक, उसके पाससे.	उनसे, उनकी अपेक्षा, उन हेतुसे, उनके हेतुसे, उनकी बनिस्वत, उनतक, उनके पाससे.
षष्ठी–उसका, उसकी, उसके.	उनका, उनकी, उनके.
सप्तमी–उसमें, उसके विषय, उसपर, उसपै, उसके अंदर, उसके भीतर, उसके मध्य.	उनमें, उनके विषय, उनपर, उनपै, उनके अंदर, उनके भीतर, उनके मध्य.
संबोधन–हे, अरे इत्यादि.	अहो, हे, भो इत्यादि.

इस प्रकार बहुत अर्थ भाषामें होते हैं। उनमेंसे जिस अर्थका यथायोग्य संभव हो, उस अर्थको ले संस्कृत वाक्यका भाषामें अर्थ करे। इससे विशेष विभक्त्यर्थविचारमें देखना।

इति विभक्त्यर्थभाषाव्यवहारः।

शब्दभेदविचार.

नाम (राम, कृष्ण इत्यादि), सर्वनाम (सर्व, यत्, तत् इत्यादि), विशेषण[1] (सुंदर, कुशल इत्यादि), अव्यय (अपि, च, एवम् इत्यादि), क्रियापद (अस्ति, भवति इत्यादि) ऐसे शब्दके पांच भेद हैं। इनमें नाम, सर्वनाम, विशेषण और अव्यय इनको 'प्रातिपदिक' कहते हैं। और प्रातिपदिकसे परे विभक्तियां (प्रथमा आदि) होती हैं। परंतु अव्ययसे परे होनेवाले विभक्तिका लोप होता है। अर्थात् अव्यय ज्योंका त्योंही रह जाता है।

धातुपाठमें[2] कहे हुए क्रियावाचक शब्दोंको 'धातु' कहते हैं, इन धातुओंसे परे कर्ता, कर्म और भाव अर्थमें नीचे

---

१ विशेषण दो प्रकारका है, 'शुद्ध विशेषण' जिससे विशेष्यगत सिद्ध धर्मका बोध होता है। और दूसरा 'विधिविशेषण' जिससे विशेष्यगत अपूर्व धर्मका बोध होता है। उनमेंसे शुद्ध विशेषणका अर्थ विशेष्यके पहिले कहना और विधिविशेषणका अर्थ विशेष्यसे परे कहना। शुद्ध विशेषणका उदाहरण–देवदत्तेन सुंदरं पुस्तकमग्राहि–(देवदत्तने अच्छा पुस्तक लिया), देवदत्तो ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति–(देवदत्त गांवको जाते घासको छूता है)। विधिविशेषणका उदाहरण–देवदत्तः स्वपुत्रं कुशलम् अकार्षीत्–(देवदत्त अपने पुत्रको चतुर करता भया), देवदत्तः विद्यया सर्वदिक्षु आत्मानं प्रसिद्धं कृतवान्–(देवदत्त विद्यासे सर्व दिशाओंमें अपनेको प्रसिद्ध करता भया। २ यह संस्कृत ग्रन्थ पाणिनीका बनाया हुआ है। इसमें अर्थसहित धातु लिखे हैं।

लिखे हुए तिङ्प्रत्यय होनेसे जो रूप सिद्ध हो जाता है, उसको क्रियापद कहते हैं । और क्रियापदकोही 'तिङंत' कहते हैं । संस्कृतभाषामें क्रियापदपर वाक्यकी समाप्ति होती है । क्वचित् कई कृदंत शब्दपरभी वाक्यकी समाप्ति होती है । यथा—कृष्णेन कंसवधः कृतः, (वा) गोरक्षणं कृतम् (कृष्णने कंसवध किया, (या) गौओंका रक्षण किया) इसमें कृत शब्द कृदंत है ।

तिङ्प्रत्यय[1].

परस्मैपद—प्रत्यय.

	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
प्रथमपुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यमपुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तमपुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपद—प्रत्यय.

प्रथमपुरुष	त	आताम्	झ
मध्यमपुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तमपुरुष	इट्	वहि	महि

लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् इन नव लकारोंके स्थानमें तिङ्प्रत्यय आदेश होते हैं । उनको संस्कृत व्याकरणशास्त्रके अनुसार अनेक विकार होनेसे प्रत्येक लकारके भिन्न भिन्न तरहके रूप होते हैं । इनके उदाहरणार्थ और प्रायः कृ, भू, अस् इन धातुओंकाही प्रयोग बहुत किया जाता है, इसीसे उक्त धातुओंके रूप लिखे जाते हैं ।

---

१ तिङ्प्रत्ययोंमें दो भेद हैं, एक 'परस्मैपद' दूसरा 'आत्मनेपद'।

परस्मैपदी अकर्मक 'भू' (होना) धातु-कर्तृप्रधानरूप.

संस्कृत.

	पुरुष.	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
लट्[1]	प्र०	भवति	भवतः	भवन्ति
	म०	भवसि	भवथः	भवथ
	उ०	भवामि	भवावः	भवामः
लिट्	प्र०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
	म०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
	उ०	बभूव	बभूविव	बभूविम
लुट्	प्र०	भविता	भवितारौ	भवितारः
	म०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
	उ०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः
लृट्	प्र०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
	म०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
	उ०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
लोट्	प्र०	भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु
	म०	भव, भवतात्	भवतम्	भवत
	उ०	भवानि	भवाव	भवाम

---

१ लट्-वर्तमान काल, लिट्-अनद्यतन (गई मध्यरातसे आनेवाली मध्यराततक कालको 'अद्यतन' कहते हैं, उससे भिन्न कालको 'अनद्यतन' कहते हैं), परोक्ष भूतकाल, लुट्-अनद्यतन भविष्यकाल, लृट्-सामान्य भविष्यकाल, लोट्-विधि-आज्ञा-निमंत्रण-आमंत्रण-प्रश्न-प्रार्थना आदि, लङ्-अनद्यतन भूतकाल, विधिलिङ्-विधि-आज्ञा आदि, आशीर्लिङ्-आशीर्वाद, लुङ्-सामान्य भूतकाल, लृङ्-जिसमें हेतुहेतुमद्भावापन्न क्रियाकी अनिष्पत्ति प्रतीत होय ऐसा भविष्यकाल।

लङ्	प्र० अभवत्	अभवताम्	अभवन्
	म० अभवः	अभवतम्	अभवत
	उ० अभवम्	अभवाव	अभवाम
विधि-लिङ्	प्र० भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
	म० भवेः	भवेतम्	भवेत
	उ० भवेयम्	भवेव	भवेम
आशी-र्लिङ्	प्र० भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
	म० भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
	उ० भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म
लुङ्	प्र० अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
	म० अभूः	अभूतम्	अभूत
	उ० अभूवम्	अभूव	अभूम
लृङ्	प्र० अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
	म० अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
	उ० अभविष्यं	अभविष्याव	अभविष्याम

हिंदी.

	पुरुष. एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
लट्	प्र० (वह) होता है	(वे)	होते हैं
	म० (तू) ,,	(तुम)	होते हो
	उ० (मैं) होता हूं	(हम)	होते हैं
लिट्	प्र० (वह) हुआ[1]	(वे)	हुए
	म० (तू) ,,	(तुम)	,,
	उ० (मैं) ,,	(हम)	,,
लुट्	प्र० (वह) होवेगा	(वे)	होवेंगे
	म० (तू) ,,	(तुम)	होओगे
	उ० (मैं) होऊंगा	(हम)	होवेंगे

१ इस (हुआ) के बदले कोई कोई 'भया' भी कहते हैं ।

लृट्	प्र० (वह) होवेगा	(वे)	होवेंगे
	म० (तू) ,,	(तुम)	होओगे
	उ० (मैं) होऊंगा	(हम)	होवेंगे
लोट्	प्र० (वह) होवे	(वे)	होवें
	म० (तू) हो	(तुम)	होओ
	उ० (मैं) होऊं	(हम)	होवें
लङ्	प्र० (वह) हुआ	(वे)	हुए
	म० (तू) ,,	(तुम)	,,
	उ० (मैं) ,,	(हम)	,,
विधि-लिङ्	प्र० (वह) होवे	(वे)	होवें
	म० (तू) हो	(तुम)	होओ
	उ० (मैं) होऊं	(हम)	होवें
आशि-र्लिङ्	प्र० (वह) होवे	(वे)	होवें
	म० (तू) हो	(तुम)	होओ
	उ० (मैं) होऊं	(हम)	होवें
लुङ्	प्र० (वह) हुआ	(वे)	हुए
	म० (तू) ,,	(तुम)	,,
	उ० (मैं) होऊंगा	(हम)	,,
लृङ्	प्र० (वह) हुआ	(वे)	हुए
	म० (तू) ,,	(तुम)	होओगे
	उ० (मैं) होऊंगा	(हम)	होवेंगे

अकर्मक 'भू' धातु भावप्रधानरूप, आत्मनेपदी[1].

संस्कृत. — **हिंदी.**

	पुरुष.	एकवचन.
लट्	प्र०	भूयते[2]
लिट्	प्र०	बभूवे[3]
लुट्	प्र०	भविता
लृट्	प्र०	भविष्यते
लोट्	प्र०	भूयताम्
लङ्	प्र०	अभूयत
विधिलिङ्	प्र०	भूयेत
आशीर्लिङ्	प्र०	भविषीष्ट
लुङ्	प्र०	अभावि
लृङ्	प्र०	अभविष्यत

हिंदीभाषामें 'होना' धातुकी भावप्रधानक्रिया प्रायः व्यवहारमें नहीं आती, इसीसे इन संस्कृतभा-वप्रधान रूपोंका अर्थ 'भू' धातुके कर्तृप्रधान रूपोंके समान तथा अपनी भाषाव्यवहारसे समझना ।

---

१ अकर्मक धातुके कर्तृप्रधान और भावप्रधान क्रियापद हो सकते हैं, तथा सकर्मक धातुके कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान क्रियापद हो सकते हैं । उनमेंसे भावप्रधान और कर्मप्रधान क्रियापद आत्मनेपदीही होते हैं । २ भावप्रधान क्रियापद कर्ता कर्मके अनुसार न रहनेसे उसके प्रथम पुरुषके एकवचनकाही प्रयोग होता है । दूसरे पुरुष या वचनोंका नहीं । ३ लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लृङ् इन लकारोंके भावप्रधानरूप और तरहकेभी होते हैं वे धातु-रूपावलि आदिसे समझ लेवे ।

अकर्मक परस्मैपदी 'अस्' (होना) धातु-कर्तरिरूप.

	संस्कृत.			हिंदी.	
	पु० एकवचन.	द्विव०	बहुवचन.	एकवचन.	द्वि० बहुवचन.
लट्	प्र० अस्ति	स्तः	सन्ति	(वह) है	(वे) हैं
	म० असि	स्थः	स्थ	(तू) ,,	(तुम) हो
	उ० अस्मि	स्वः	स्मः	(मैं) हूं	(हम) हैं
लोट्	प्र० अस्तु, स्तात्	स्ताम्	सन्तु		
	म० एधि, स्तात्	स्तम्	स्त		
	उ० असानि	असाव	असाम		
लङ्	प्र० आसीत्	आस्ताम्	आसन्		
	म० आसीः	आस्तम्	आस्त		
	उ० आसम्	आस्व	आस्म		
विधि-लिङ्	प्र० स्यात्	स्याताम्	स्युः		
	म० स्याः	स्यातम्	स्यात		
	उ० स्याम्	स्याव	स्याम*		

यहां अवशिष्ट क्रियापदोंका अर्थ 'भू' धातुके कर्तृप्रधान रूपोंके स-मान जानना।

सकर्मक परस्मैपदी 'कृ' (करना) धातु-कर्तृप्रधानरूप.

संस्कृत.

	पु० एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
लट्	प्र० करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
	म० करोषि	कुरुथः	कुरुथ
	उ० करोमि	कुर्वः	कुर्मः

---

* लिट् लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ् इन लकारोंमें 'अस्' धातुका प्रयोग नहीं होता। तहां 'भू' धातुका प्रयोग करे। एवं इसके भावप्रधान क्रियापदभी नहीं होते। तहां 'भू' धातुके भावप्रधान क्रियापदोंका प्रयोग किया जाता है।

लकार	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लिट्	प्र०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
	म०	चकर्थ	चक्रतुः	चक्र
	उ०	चकार, चकर	चकृव	चकृम
लुट्	प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
	म०	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ
	उ०	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः
लृट्	प्र०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
	म०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
	उ०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः
लोट्	प्र०	करोतु,कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
	म०	कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
	उ०	करवाणि	करवाव	करवाम
लङ्	प्र०	अकरोत्	अकुरुतम्	अकुर्वन्
	म०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
	उ०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
विधि-लिङ्	प्र०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
	म०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
	उ०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
आशीर्लिङ्	प्र०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः
	म०	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त
	उ०	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म
लुङ्	प्र०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
	म०	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
	उ०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म
लृङ्	प्र०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्
	म०	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत
	उ०	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम

हिंदी.

	पु० एकवचन.	द्विवचन-बहुवचन.
लट्	प्र० (वह) करता है	(वे) करते हैं
	म० (तू) करता है	(तुम) करते हो
	उ० (मैं) करता हूं	(हम) करते हैं
लिट्	प्र०(वह)करता हुआ	(वे) करते हुए
	म० (तू) ,,	(तुम) ,,
	उ० (मैं) ,,	(हम) ,,
लुट्	प्र० (वह) करेगा	(वे) करेंगे
	म० (तू) ,,	(तुम) करोगे
	उ० (मैं) करूंगा	(हम) करेंगे
लृट्	प्र० (वह) करेगा	(वे) करेंगे
	म० (तू) ,,	(तुम) करोगे
	उ० (मैं) करूंगा	(हम) करेंगे
लोट्	प्र० (वह) करे	(वे) करें
	म० (तू) कर	(तुम) करो
	उ० (मैं) करूं	(हम) करें
लङ्	प्र० (वह) करता हुआ	(वे) करते हुए
	म० (तू) ,,	(तुम) ,,
	उ० (मैं) ,,	(हम) ,,
विधि-लिङ्	प्र० (वह) करे	(वे) करें
	म० (तू) कर	(तुम) करो
	उ० (मैं) करूं	(हम) करें
आशी-र्लिङ्	प्र० (वह) करे	(वे) करें
	म० (तू) कर	(तुम) करो
	उ० (मैं) करूं	(हम) करें
लुङ्	प्र० (वह) करता हुआ	(वे) करते हुए
	म० (तू) ,,	(तुम) ,,
	उ० (मैं) ,,	(हम) ,,

लृट्	प्र० (वह) करेगा		(वे) करेंगे
	म० (तू) करेगा		(तुम) करोगे
	उ० (मैं) करूंगा		(हम) करेंगे

सकर्मक आत्मनेपदी 'कृ' (करना) धातु–कर्तरिरूप.

संस्कृत.

	पुरुष.	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
लट्	प्र०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	म०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	उ०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लिट्	प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
	म०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
	उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे
लुट्	प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
	म०	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
	उ०	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे
लृट्	प्र०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
	म०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
	उ०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे
लोट्	प्र०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
	म०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
	उ०	करवै	करवावहै	करवामहै
लङ्	प्र०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
	म०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
	उ०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

---

१ जिन धातुओंके आत्मनेपदी और परस्मैपदी कर्तृप्रधान रूप बनते हैं उनको उभयपदी धातु कहते हैं। २ परस्मैपदी 'कृ' (करना) धातुके क्रियापदोंका हिंदी अर्थ यथानुक्रम यहांपरभी जान लेना।

विधिलिङ्	प्र०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
	म०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
	उ०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
आशीर्लिङ्	प्र०	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
	म०	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीध्वम्
	उ०	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि
लुङ्	प्र०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
	म०	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्म्
	उ०	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि
लृङ्	प्र०	अकरिष्यत	अयरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
	म०	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
	उ०	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

सकर्मक आत्मनेपदी 'कृ' (करना) धातु–कर्मणिरूप.

संस्कृत.

	पु०	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
लट्	प्र०	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
	म०	क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
	उ०	क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

---

१ लिट्, लुट्, लृट्, आशीर्लिङ्, लुङ् और लृङ् इन अवशिष्ट छः लकारोंके कर्मप्रधानरूप और आत्मनेपदी 'कृ' धातुके इसी लकारोंके कर्तृप्रधानरूप एकही हैं उनमेंसे केवल लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन 'अकारि' ऐसा कर्मप्रधानरूप और 'अकृत' ऐसा कर्तृप्रधानरूप होता है, इन अतिदिष्ट (न लिखे हुए) कर्मप्रधानरूपोंका अर्थ लट् लोट् आदि लकारोंके लिखे हुए कर्मप्रधानरूपोंके अर्थानुसार यथायोग्य जान लेवे । 'कृ' धातुके लिट् आदि छः लकारोंके कर्मप्रधानरूप औरभी बहुत प्रकारके होते हैं वे धातुरूपावलि आदिसे समझ लेवे ।

लोट्	प्र० क्रियताम्	क्रियेताम्	क्रियन्ताम्
	म० क्रियस्व	क्रियेथाम्	क्रियध्वम्
	उ० क्रियै	क्रियावहै	क्रियामहै
लङ्	प्र० अक्रियत	अक्रियेताम्	अक्रियन्त
	म० अक्रियथाः	अक्रियेथाम्	अक्रियध्वम्
	उ० अक्रिये	अक्रियावहि	अक्रियामहि
विधि-लिङ्	प्र० क्रियेत	क्रियेयाताम्	क्रियेरन्
	म० क्रियेथाः	क्रियेयाथाम्	क्रियेध्वम्
	उ० क्रियेय	क्रियेवहि	क्रियेमहि

हिंदी.

		एकवचन.	द्विवचन—बहुवचन.
लट्	प्र०	(वह) किया जाता है	(वे) किये जाते हैं
	म०	(तू) ”	(तुम) किये जाते हो
	उ०	(मैं) किया जाता हूं	(हम) किये जाते हैं
लोट्	प्र०	(वह) किया जावे	(वे) किये जावें
	म०	(तू) किया जा	(तुम) किये जाओ
	उ०	(मैं) किया जाऊं	(हम) किये जावें
लङ्	प्र०	(वह) किया गया	(वे) किये गये
	म०	(तू) ”	(तुम) ”
	उ०	(मैं) ”	(हम) ”
विधि-लिङ्	प्र०	(वह) किया यावे	(वे) किये जावें
	म०	(तू) किया जा	(तुम) किये जाओ
	उ०	(मैं) किया जाऊं	(हम) किये जावें

कालपुरुषविचार.

जिस क्रियाका कर्ता वा कर्म जब प्रथमा विभक्त्यंत 'अस्मद्' (अहं) शब्दसे बोधित हो जाय तब उस क्रियावाचक धातुसे उत्तम पुरुषका प्रयोग करे, और प्रथमा-

विभक्त्यंत 'युष्मत्' (त्वम्) शब्दसे बोधित हो तो मध्यम पुरुषका प्रयोग करे, अन्यत्र अर्थात् 'तत् (सः) भवत्' आदि शब्दोंसे बोधित होवे तो प्रथम पुरुषका प्रयोग करे। कदाचित् इन (अस्मत्, युष्मत् और तत् आदि) शब्दोंका वाक्यमें साक्षात् प्रयोग न होवे तौभी अध्याहार आदि संभवमात्रसे उक्त व्यवस्था जाननी।

लट् आदि उक्त लकारोंके विषयमें कालका सामान्य नियम ऐसा है कि—

लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ्लङ्लिटस्तथा।
विध्याशिषोश्च लिङ्लोटौ लुट् लृट् लृङ् च भविष्यति॥

वर्तमानकालमें लट्, वेदमें लेट्का प्रयोग होता है (लोक व्यवहारमें नहीं), भूतकालमें लङ् लुङ् और लिट् तथा विधि आशीर्वाद आदि अर्थोंमें लिङ् लोट् और भविष्यकालमें लुट् लृट् लृङ् होते हैं। इससे विशेष विस्तार धातुरूपावली आदिसे मालूम होगा।

कारकविचार.

जो कोई क्रियाका जनक होवे उसको कारक कहते हैं। वे छः हैं यथा—१ कर्ता, २ कर्म, ३ करण, ४ संप्रदान, ५ अपादान और ६ अधिकरण इति।

१ कर्ताकारक—जो कोई मुख्यतासे क्रिया करे, वह कर्ता कहाता है।

२ कर्मकारक–जो किया जावे, जो देखा जावे, जो पिया जावे, जो खाया जावे, जो दान किया जावे या जो स्पर्श किया जावे अर्थात् कर्ताके व्यापारसे उत्पन्न हुए फलका जो आश्रय होवे, उसको कर्म कहते हैं।

३ करणकारक–विशेषतः जिस साधनसे कर्ताकी क्रिया सिद्ध हो जावे, उसको करण कहते हैं।

४ संप्रदानकारक–जिसको वस्तु दान की जावे अर्थात् त्याग क्रियाका जो उद्देश्य होवे, वह संप्रदान कहा जाता है।

५ अपादानकारक–जिससे कोई पदार्थ डरे, चले, उत्पन्न होवे या ग्रहण करे अर्थात् जिससे किसी वस्तुका विश्लेष (विभाग) उत्पन्न होवे, उसको अपादान कहते हैं।

६ अधिकरणकारक–जिसमें क्रिया होवे अर्थात् कर्ताके द्वारा या कर्मके द्वारा जो क्रियाका आधार होवे, उसको अधिकरण कहते हैं।

विभक्त्यर्थविचार.

१ प्रथमा विभक्ति–कर्तरि क्रियापद रहे तो कर्ता अर्थमें होती है। यथा–रामो गच्छति–(राम जाता है), कर्मणि क्रियापद रहे तो कर्म[1] अर्थमें होती है। यथा–रामः भक्तेन

---

[1] कर्मणि क्रियापदके दो कर्म हों तो उनमेंसे कर्मणि क्रियापद-द्वारा जिस कर्मका बोध होवे उस एकही कर्मअर्थमें प्रथमा विभक्ति होती है अर्थात् दूसरे कर्मअर्थमें द्वितीयाविभक्ति होती है। यथा–देवदत्तेन ग्रामम् अजा नीयते–(देवदत्तसे भेडी गांवको ली जाती है)। इससे विशेष विचार अन्यत्र देखो।

दृश्यते-(राम भक्तसे देखा जाता है), संबोधन[1] अर्थमें होती है। यथा-हे राम, कृपां कुरु-(हे राम! कृपा कर) और जहां किसीही विभक्तिकी प्राप्ति नहीं वहांभी होती है। यथा-भवितव्यम्, स्थातव्यम्, जलम्-(होना, रहना, जल) इत्यादि।

२ द्वितीया विभक्ति-कर्म अर्थमें होती है। यथा-रामं भक्तः पश्यति-(रामको भक्त देखता है), क्रियाके विशेषणमें द्वितीया विभक्तिका एकवचनही होता है और नपुंसकलिंगके समान रूप रहता है। यथा-सत्वरं धावति-(शीघ्र दौडता है), धिक्[2] आदि शब्दोंके योगमें होती है। यथा-पापिनं धिक्-(पापीको धिक्), लङ्कां निकषा तिष्ठति-(लंकाके पास रहता है), अत्यंत संयोगकी विवक्षा करनेपर कालवाचक तथा देशवाचक शब्दोंसे होती है। यथा-मासं सुखदा-(महीनेतक सुख देनेवाली), क्रोशं कुटिला नदी-(कोशतक टेढी नदी)।

३ तृतीया विभक्ति-करण अर्थमें होती है। यथा-जलेन अग्निं निर्वापयति-(जलसे अग्निको बुझाता है),

---

१ संबोधन उसे कहते हैं जिससे कोई किसीको चिताकर या पुकारकर अपने संमुख करता है। २ धिक्, उभयतः, सर्वतः, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोधस्, अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, अन्तरा, अन्तरेण, अनु, पृथक्, नाना, विना, ऋते इत्यादि औरभी शब्द जानना। शब्दके योगमें जो विभक्ति होती है उसको 'उपपदविभक्ति' कहते हैं।

कर्ता अर्थमें होती है। यथा-कृष्णेन कंसो हन्यते-(कृष्णसे कंस मारा जाता है), हेतु[1] अर्थमें होती है। यथा-गुरुसेवया विद्वान् भवति-(गुरुकी सेवा (हेतु) से विद्वान् होता है), सह (साथ) शब्दके अर्थके योगमें होती है। यथा-लक्ष्मणेन सह रामो गतः-(लक्ष्मणके साथ राम गया) या, सीतया साकं गतः-(सीताजीके साथ गया), पृथक्[2] आदि शब्दोंके योगमें होती है। यथा-रामेण पृथक् तिष्ठति-(रामसे जुदा रहता है)।

४ चतुर्थी विभक्ति-संप्रदान अर्थमें होती है। यथा-दरिद्राय द्रव्यं देहि-(दरिद्रको द्रव्य दे), निमित्त अर्थमें होती है। यथा-ज्ञानाय अध्ययनम्-(ज्ञानके निमित्त (वास्ते) पढना), मोक्षाय शिवं स्मरति-(मोक्षके वास्ते शिवजीको स्मरता है), नमः[3] आदि शब्दोंके योगमें होती है। यथा-कृष्णाय नमः-(कृष्णको प्रणाम)।

पंचमी विभक्ति-अपादान अर्थमें होती है। यथा-सिंहात् बिभेति-(सिंहसे डरता है), ग्रामात् आयाति-(गांवसे आता है), हेतु[4] अर्थमें होती है। यथा-पापात् दुःखं भवति-(पापसे दुःख होता है), अपेक्षा अर्थमें होती

१ हेतु अर्थमें पंचमी विभक्तिभी होती है, यह आगे (पंचमी-विभक्तिमें) स्पष्ट हो जावेगा। २ पृथक्, विना, नाना, सदृश, सदृक्ष, तुल्य, सम, समान, सदृक् इत्यादि औरभी शब्द जानना। ३ नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् इत्यादि औरभी शब्द जानना। ४ हेतु अर्थमें तृतीयाभी होती है, ऐसा तृतीया-विभक्तिमें कहा है।

है। यथा—धनात् विद्या गरीयसी—(द्रव्यकी अपेक्षा विद्या श्रेष्ठ है), देवदत्तात् यज्ञदत्तः कुशलः—(देवदत्तसे यज्ञदत्त चतुर), अन्य[1] आदि शब्दोंके योगमें होती है। यथा—कृष्णात् अन्योऽस्ति—(कृष्णसे भिन्न (जुदा) है), पुण्यात् विना न सुखम्—(विना पुण्य सुख नहीं)।

षष्ठी विभक्ति—संबंध अर्थमें होती है। यथा—राज्ञः पुरुषः—(राजाका पुरुष), कई धातुसाधित (कृदंत) शब्दोंके योगमें कर्ता तथा कर्म इन अर्थोंमें होती है। यथा—कृष्णस्य गमनम्—(कृष्णका गमन), इस उदाहरणमें गमनक्रियाका कर्ता कृष्ण है। भुवनस्य रक्षिता—(जगत्का रक्षक), इस उदाहरणमें रक्षण क्रियाका कर्म जगत् है। यदि धातुसाधित (कृदंत) शब्दोंके योगमें कर्ता और कर्म इन दोनोंकाभी प्रयोग साथ किया जावे तो प्रायः कर्म अर्थमेंही (षष्ठी) होती है; अर्थात् कर्ता अर्थमें तृतीया हो जाती है। यथा—ईश्वरेण जगतः कृतिः—(ईश्वरसे जगत्की रचना), संबंधकी विवक्षा करनेपर सब कर्ता आदि कारक अर्थमें (षष्ठी) होती है। यथा—मातुः स्मरति—(माताको स्मरता है) इत्यादि। जिससे निर्धारण[2] हो जावे उससे षष्ठी होती है।

---

१ अन्य, इतर, भिन्न, आरात्, ऋते, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, प्राक्, अर्वाक्, प्रत्यक्, सम्यक्, प्रभृति, बहिः, पृथक्, विना, नाना, दूर, निकट इत्यादि औरभी शब्द जानना। २ समुदायसे जाति, गुण या क्रियासे वस्तु जुदी करना, उसको निर्धारण कहते हैं और इस अर्थमें सप्तमीभी होती है, यह आगे स्पष्ट हो जावेगा।

यथा–नृणां विप्रः श्रेष्ठः–(मनुष्योंमें ब्राह्मण श्रेष्ठ), सदृश[1] आदि शब्दोंके योगमें होती है । यथा–शिवस्य सदृशः शिवभक्तः–(शिवजीके समान शिवभक्त है)।

७ सप्तमी विभक्ति–अधिकरण अर्थमें होती है । यथा–आसने आस्ते–(आसनपर बैठता है), गृहे तिष्ठति–(घरमें रहता है), मोक्षे इच्छा अस्ति–(मोक्षके विषे आशा है), जिससे निर्धारण होवे उससे होती है । यथा–कविषु वाल्मीकिः श्रेष्ठः–(कवियोंमें वाल्मीकि श्रेष्ठ), जिसकी[3] क्रियासे दूसरेकी क्रिया बोधित हो जाय उससे होती है । यथा–गोषु दुह्यमानासु गतः–(गौओंको दुहते समय गया), उस सप्तमीको ' सतिसप्तमी ' भी कहते हैं । अर्थात् इस उक्त उदाहरणमें ' सतीषु ' ऐसा प्रयोगभी करते हैं, किसी उदाहरणमें प्रयोग न होवे तो अध्याहारभी करते हैं । स्वामी आदि शब्दोंका योग होवे तो संबंध अर्थमें विकल्पसे (सप्तमी) होती है । यथा–

---

१ सदृश, सदृक्ष, तुल्य, सम, समान, सदृक्, दक्षिणतः, पुरः, पुरस्तात्, उपरि, उपरिष्टात, दूर, निकट, समीप इत्यादि औरभी शब्द जानना । २ षष्ठीभी होती है, उसका उदाहरण षष्ठी विभक्तिमें लिखा है । ३ उसही अर्थमें अनादर अर्थभी बोधित हो तो ' षष्ठी, सप्तमी ' होती हैं । यथा–पुत्रस्य रुदतः प्राव्राजीत्, (वा) पुत्रे रुदति सति प्राव्राजीत्–(पुत्रके रोते समय [उसका अनादर कर] जाता भया) । ४ स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू, प्रसूत इत्यादि औरभी शब्द जानना । ५ सप्तमी न की जावे तो षष्ठीही होती है । यथा–गवां स्वामी–(गौओंका स्वामी) ।

गोषु स्वामी–(गौओंका मालिक)। *

यदि एकशब्दसे कारक अर्थमें होनेवाली विभक्ति तथा उपपदविभक्ति इन दोनों विभक्तियोंकी साथही प्राप्ति होय तो कारक-विभक्तिही करनी। यथा–कृष्णं नमस्करोति–(कृष्णको नमस्कार करता है) यहां नमस्कारक्रियाका कर्म कृष्ण है, इसीसे कृष्णशब्दसे कर्मअर्थमें द्वितीया प्राप्त हुई और नमस्‌शब्दका योग होनेसे चतुर्थी प्राप्त हुई, परंतु द्वितीयाही हुई। औरभी सामान्य नियम है कि, विवक्षातः कारकाणि भवंति–(प्रयोगकर्ताके विवक्षासे कारक अदलबदल हो जाते हैं), परंतु प्राचीन प्रयोगोंके अनुसारही वह विवक्षा उचित है। विशेष्य–विशेषणोंका वचन–विभक्ति प्रायः समानही रहती हैं। तथा उपमान–उपमेयकी विभक्ति समान रहती है। यथा–देवम् इव विप्रं पूजति–(देवताके समान ब्राह्मणको पूजता है)। इति सामान्यविभक्त्यर्थविचारः।

कृदंतविचार.

धातुसे परे तव्य, अनीय आदिक जो प्रत्यय होते हैं, उनको 'कृत्' ऐसा कहते हैं। और कृत्प्रत्ययोंसे जो शब्द बनते

---

* अनेक गणोंमें एकही शब्द लिखनेसे अनेक विभक्तियां आवें तो वक्ताने अपनी इच्छानुसार चाहिये सो विभक्ति करनी। यथा–विनाशब्द 'धिक् आदि' शब्दोंमें 'पृथक् आदि' शब्दोंमें तथा 'अन्य आदि' शब्दोंमें लिखनेसे द्वितीया तृतीया और पंचमी ये तीनोंभी विभक्तियां एकत्र प्राप्त हुईं उनमेंसे चाहिये सो होती है। अन्य शब्दोंके विषेंभी ऐसा जानना। यह बात सिद्धही है।

हैं उनको 'कृदंत' कहते हैं। कृत्प्रत्यय बहुत प्रकारके हैं, वे करनेसे धातुसाधित शब्द बहुत प्रकारके हो जाते हैं। उनमें-से प्रायः कृधातुसाधित कई शब्द लिखे जाते हैं।

सकर्मक धातुसे कर्मअर्थमें और अकर्मक धातुसे भाव अर्थमें तव्य, अनीय, य ये प्रत्यय होते हैं। उन प्रत्ययांत सकर्मक धातुके रूपोंका लिंग वचन कर्मवाचकशब्द (विशेष्य) के समान हो जाते हैं और उन प्रत्ययांत अकर्मक धातुके रूप नपुंसकमें प्रथमा एकवचनांतही रहते हैं। यथा–कृ–तव्य–कर्तव्यं, अनीय–करणीयः, य–कार्या (करने योग्य या करना) भू–तव्य–भवितव्यम् (होना) इत्यादि। ये शब्द क्रियापदकाभी काम कर सकते हैं, इतना उक्त प्रत्ययोंमें विशेष है। कर्ताअर्थमें तृ–कर्ता, अक–कारकः, अ–करः (करनेवाला)। भूतकालके कर्ता अर्थमें तवत्–कृतवान्। वर्तमानकालके कर्ता अर्थमें शतृ–कुर्वन्, शान–कुर्वाणः। भविष्यकालके कर्ताअर्थमें शतृ-करिष्यन्,शान-करिष्यमाणः वर्तमानकालके कर्मअर्थमें शान-क्रियमाणः। भविष्यकालके कर्मअर्थमें शान–करिष्यमाणः। कर्म उपपद रहे तो कर्ता-

१ धातुसे परे प्रत्यय करनेपर बीचमें प्रायः बहुत प्रकारके विकार होकर सिद्धरूप बनते हैं, यह लिखनेसे बहुतही विस्तार होगा इसीसे नहीं लिखा गया। २ चाहे तो यहभी क्रियापदका काम करता है, नहीं तो विशेषण होके रहता है। ३ आत्मनेपदी धातुसे यह (शान) प्रत्यय होता है, और (शतृ) प्रत्यय परस्मैपदी धातुसे होता है, उभयपदी धातुसे दोनोंभी होते हैं।

अर्थमें अण्-कुंभकारः (घडा करनेवाला 'कुह्मार') सामान्य दूसरा उपपद रहे तो कर्ताअर्थमें इन्-उपकारी । यथा कर्मअर्थमें अ-सुकरः (सुखसे करने योग्य), सकर्मकधातुसे भूतकालके कर्मअर्थमें त[1]-कृतः (किया हुआ) । अकर्मक, गत्यर्थक आदि धातुसे भूतकालके कर्ताअर्थमें त-भूतः, गतः । सकर्मक और अकर्मक इन दोनोंसेभी भावअर्थमें कृतं, भूतं, क्रिया, कृतिः, कृत्यम्, प्रकारः, प्रभावः, करणम् इत्यादि । निमित्तअर्थमें तुम्-कर्तुम् (करनेके वास्ते) । अनंतर अर्थमें त्वा-कृत्वा, भूत्वा (करनेके अनंतर, होके) । यदि उपसर्गका संबंध होवे तो त्वाके जगह 'य[2]' आदेश होता है । यथा-संस्कृत्य (संस्कार करके), प्रभूय (समर्थ होनेके अनंतर) । उपसर्ग ये हैं । प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उद्, अभि, प्रति, परि, उप इति । उपसर्गका संबंध होनेसे धातुओंके अर्थ और और हो जाते हैं । यथा-प्र-कार, उप-कार, अनु-कृति, सं-स्कार, अपकार, वि-कार, आ-कार, इस प्रकार प्र-भाव, सं-भव, विभूति, अनु-भव इत्यादि । इति कृदंतदिशाप्रदर्शन ।

---

१ कई धातुओंसे वर्तमानमेंभी यह (त) प्रत्यय होता है, यथा-मतः (मान्य) आदि । २ तुम्, त्वा, य इन कहे हुए प्रत्ययांत शब्द अव्ययसंज्ञक होते हैं । ३ 'य' आदेश होनेपर ह्रस्वांत धातुके परे 'त्' होता है ।

तद्धितविचार.

तद्धित संज्ञक कई प्रत्यय हैं । वे योग्यतानुसार प्रातिपदिकसे अपत्य आदि अर्थोंमें होते हैं, और बहुताई आदि स्वरको वृद्धि होती है । और तद्धितप्रत्ययांत शब्दको 'तद्धितवृत्ति' कहते हैं । अपत्यअर्थमें अ, इ, य, एय, ईय आदि बहुत प्रत्यय होते हैं। यथा-वसुदेव-अ-वासुदेव (कृष्ण) दशरथ-इ-दाशरथि (राम), गर्ग-य-गार्ग्य (गर्गका लडका), भगिनी-एय-भागिनेय (बहिनका लडका), स्वसृ-ईय-स्वस्रीय (बहिनका लडका), भ्रातृ-व्य-भ्रातृव्य (भाईका लडका) ऐसे बहुत प्रकारके उदाहरण जान लेवे । अ, इय आदि प्रत्यय संबंध आदि बहुतही अर्थोंमें होते हैं। यथा-पृथा-अ-पार्थ (कुंतीका संबंधी 'पांडव') स्रुघ्न-अ-स्रौघ्न (स्रुघ्न देशसे आया हुआ, या स्रुघ्नमें होनेवाला), तद्-ईय-तदीय (तेरे संबंधी), शाला-ईय-शालीय (शालामें होनेवाला), मृत्तिका-अ-मार्त्तिकः (मिट्टीका विकार 'घडा'), असि-इक-आसिक (खड्ग जिसका हथियार है वह), धर्म-इक-धार्मिक (धर्म करनेवाला), प्रस्थ-इक-प्रास्थिक (सेरसे खरीद लिया हुआ) इत्यादि बहुत तरह तरहके हैं, वे प्रयोगानुसार जान लेना । तुल्य अर्थमें वत् प्रत्यय होता है । यथा-ब्राह्मणवत् अधीते

---

१ प्रातिपदिक किसको कहते हैं यह पांचवें सफेपर शब्दभेदविचारमें देख लो । २ यहांभी प्रत्यय करनेपर बहुत विकार होके सिद्धरूप बनते हैं ।

(ब्राह्मणके समान पढता है), एवं घटवत् शूद्रवत् आदि। नांत संख्यावाचक शब्दोंसे पूरण अर्थमें म होता है। यथा-पंचन्-म-पंचम (पांचवां)। एकादश आदि शब्दोंसे अ प्रत्यय होता है। यथा-एकादशन्-अ-एकादश (ग्यारहवां)। विंशति आदि शब्दोंसे तम या अ प्रत्यय होता है। यथा-विंशति-तम-विंशतितम, अ-विंश (बीसवां)। शत सहस्र आदि शब्दोंसे तमही होता है। यथा-सहस्रतम (हजारवां)। प्रकार अर्थमें संख्यावाचक शब्दोंसे धा, भवतशब्दके विना सर्वनामसंज्ञक शब्दोंसे था प्रत्यय होता है। यथा-द्विधा, विंशतिधा, शतधा (दो प्रकारसे, बीस प्रकारसे, सौ प्रकारसे), सर्वथा (सब प्रकारोंसे), अन्यथा (अन्य प्रकारसे) यथा (जिस प्रकारसे), तथा (उस प्रकारसे) इत्यादि। वार अर्थमें संख्यावाचक शब्दोंसे शस् प्रत्यय होता है। यथा-बहुशः, एकशः, शतशः (बहुतवार, एकवार, सौवार) इत्यादि। भाव (पन) अर्थमें त्व, ता, अ, य ये प्रत्यय होते हैं। यथा-कुशल-त्व-कुशलत्व, ता-कुशलता, अ-कौशल, य-कौशल्य (चतुरपन) इस प्रकार गोत्व, ब्राह्मणत्व, मूर्खत्व, मूर्खता, मधुरता, लघुता, लाघव, सौहृद, कौमार, सौकुमार्य, दास्य, चातुर्य, औदार्य, धैर्य, सांख्य, वीर्य, काश्र्य, गांभीर्य इत्यादि। 'भाव' अर्थमें इमन् प्रत्ययभी होता है। यथा-लघु-इमन्-लघिमन् (छोटापन) इस प्रकार गरिमन्, अणिमन्, कालिमन्, ऋजिमन्

इत्यादि । 'अतिशय' अर्थमें तर, तम, इष्ठ, ईयस् प्रत्यय होते हैं । यथा–लघु–तर–लघुतर, तम–लघुतम, इष्ठ–लघिष्ठ, ईयस्–लघीयस् (अत्यंत छोटा), एवं गरिष्ठ, गरीयस्, कनिष्ठ, कनीयस्, स्थविष्ठ, स्थवीयस्, पापिष्ठ, पापीयस्, ह्रसिष्ठ, ह्रसीयस्, द्राघिष्ठ, द्राघीयस् इत्यादि । 'प्रमाण' अर्थमें मात्र, दघ्न, द्वयस्, प्रत्यय होते हैं । यथा–हस्त–मात्र–हस्तमात्र, (हाथप्रमाण) (खंभ), इस प्रकार जानुमात्र, जानुदघ्न, जानुद्वयस् इत्यादि । 'वाला' अर्थमें मत्, इन् आदि प्रत्यय होते हैं । यथा–श्री–मत्–श्रीमत्, गुण–इन्–गुणिन् (लक्ष्मीवाला, गुणवाला) इत्यादि । इति तद्धितदिशाप्रदर्शन.

स्त्रीप्रत्ययविचार ।

कई शब्दोंका स्त्रीलिंगमें प्रयोग होवे तो उनसे स्त्रीप्रत्यय होता है । कई अकारांत शब्दोंसे स्त्रीलिंगमें प्रयोग करनेके लिये आ प्रत्यय और कईसे ई प्रत्यय होता है । यथा-सर्व–सर्वा, अज–अजा, शूद्र–शूद्रा, दृढ–दृढा इत्यादि । ब्राह्मण–ब्राह्मणी, नद–नदी, सुंदर–सुंदरी, कुमार–कुमारी, गौर–गौरी इत्यादि । जिन शब्दोंके अंतमें 'मत्' या 'वत्' रहे तिन्होंसे स्त्रीलिंगमें ई प्रत्यय होता है । यथा-श्रीमत्–श्रीमती, गुणवत्–गुणवती इत्यादि । जिस शब्दके अंतमें शतृप्रत्ययका अत् रहे, उससे स्त्रीलिंगमें ई प्रत्यय होता है । यथा–बिभ्रत्-

---

१ कई उदाहरणोंमें इस 'म' के जगह 'व' आदेश होता है । यथा–धनवत् ।

बिभ्रती, जुह्वत्–जुह्वती इत्यादि । तथा ऐसे कई शब्दोंके 'त' के पीछे न् भी लग जाता है । यथा–दीव्यत्–दीव्यन्ती, पचत्–पचन्ती इत्यादि । जिस शब्दके अन्तमें न् रहे इससे स्त्रीलिंगमें ई प्रत्यय होता है । यथा–मनोहारिन्–मनोहारिणी, मानिन्–मानिनी, राजन्–राज्ञी, सुनामन्–सुनाम्नी इत्यादि । स्वसृ आदि शब्दोंको छोड ऋकारांत शब्दोंसे ई प्रत्यय होता है । यथा–कर्तृ–कर्त्री, पक्तृ–पक्त्री इत्यादि । गुणवाचक उकारांत शब्दोंसे विकल्पकरके स्त्रीलिंगमें ई प्रत्यय होता है । यथा–पटु–पट्वी, पटुः; मृदु–मृद्वी, मृदुः इत्यादि । जिसके अंतमें ईयस् रहे उससेभी स्त्रीलिंगमें ई प्रत्यय होता है । यथा गरीयस्–गरीयसी, लघीयस्–लघीयसी इत्यादि ।

इति साधारणस्त्रीप्रत्ययविचारः ।

स्थानप्रयत्नविचार.

अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ इन नव वर्णोंको मूलस्वर कहते हैं । क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, इन तेतीस वर्णोंको व्यंजन कहते हैं ।

---

१ स्वसृ, तिसृ, चतसृ, ननान्दृ, दुहितृ, यातृ, मातृ, इति ।

२ कृदन्त, तद्धित और स्त्रीप्रत्यय इनके विचारमें प्रायः मूलशब्द (प्रातिपादक) ही लिखे हैं, उनको लिंगविचारपूर्वक शब्दरूपावलीके अनुसार चला लेवे ।

१ अ, ह, विसर्ग (:), क, ख, ग, घ, ङ–कंठ-स्थान ।
इ, य, श, च, छ, ज, झ, ञ–तालु-स्थान ।
ऋ, र, ष, ट, ठ, ड, ढ, ण–मूर्धा-स्थान ।
ऌ, ल, स, त, थ, द, ध न–दंत-स्थान ।
उ, उपध्मानीय (ᳵप ᳵफ), प, फ, ब, भ, म–ओष्ठ-स्थान ।
व–दंतोष्ठ-स्थान ।
ङ, ञ, ण, न, म, अनुस्वार (ं)-नासिका-स्थान ।
जिह्वामूलीय (ᳵक ᳵख)–जिह्वामूल-स्थान ।

२ क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म (स्पर्श)–स्पृष्ट-प्रयत्न ।
य, र, ल, व (अंतःस्थ) ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न ।
श, ष, स, ह (ऊष्म) ईषद्विवृत प्रयत्न ।
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ–विवृत-प्रयत्न ।
अ–संवृत-प्रयत्न ।

इनमें जिन जिन वर्णोंका स्थान और प्रयत्न एक होवे; उनको परस्पर ' सवर्ण ' कहते हैं । इति स्थानप्रयत्नविचार ।

[1]स्वरसंधिका अपवाद.

ओकारांत निपातका परस्वरसे संधि नहीं होता यथा–अहो ईशाः इत्यादि । द्विवचनांत शब्दके दीर्घ ' ई, ऊ, ए' इन स्वरोंका पर (आगेके) स्वरसे संधि नहीं होता । पूर्व और

---

१ स्वरसंधिचक्र अगले सफेपर लिखा है ।

पर दोनोंभी स्वर ज्योंके त्योंही रहते हैं। यथा—हरी एतौ, भानू अत्र, गंगे अमू इत्यादि। पुकारनेमें शब्दका जो अंत्य स्वर लंबा होता है उस स्वरका परस्वरसे संधि विकल्पसे होता है। यथा—राम ३ अत्र, रामाऽत्र इत्यादि।

पूर्व और पर स्वरोंके संधिका चक्र.

पूर्व स्वर	पर स्वर.												
	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ
अ आ	आ		ए		ओ		अर्		अल्	ऐ		औ	
इ ई	य	या	ई		यु	यू	यृ	यॄ	यॢ	ये	यै	यो	यौ
उ ऊ	व	वा	वि	वी	ऊ		वृ	वॄ	वॢ	वे	वै	वो	वौ
ऋ ॠ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ		ॠ	रे	रै	रो	रौ
ऌ	ल	ला	लि	ली	लु	लू	ॠ			ले	लै	लो	लौ
ए	एऽ	अया अआ	आयि अइ	अयी अई	अयु अउ	अयू अऊ	अयृ अऋ	अयॄ अॠ	अयॢ अऌ	अये अए	अयै अऐ	अयो अओ	अयौ अऔ
ऐ	आय आअ	आया आआ	आयि आइ	आयी आई	आयु आउ	आयू आऊ	आयृ आऋ	आयॄ आॠ	आयॢ आऌ	आये आए	आयै आऐ	आयो आओ	आयौ आऔ
ओ	ओऽ	अवा अआ	अवि अइ	अवी अई	अवु अउ	अवू अऊ	अवृ अऋ	अवॄ अॠ	अवॢ अऌ	अवे अए	अवै अऐ	अवो अओ	अवौ अऔ
औ	आव आअ	आवा आआ	आवि आइ	आवी आई	आवु आउ	आवू आऊ	आवृ आऋ	आवॄ आॠ	आवॢ आऌ	आवे आए	आवै आऐ	आवो आओ	आवौ आऔ

॥ शिक्षाविचारः समाप्तः ॥

उपदेशविचार.

ध्यानमें रखना चाहिये कि, इस उपदेशविचारमें संस्कृत वाक्यका हिंदी भाषांतर प्रायः संस्कृतके अनुसार (शब्दशः) ही किया गया है। इसका कारण विद्यार्थियोंको संस्कृत शब्दविभक्ति आदिका पूरा पूरा ज्ञान होना, यही है। तौभी हिन्दी जाननेवाले हिन्दी वाक्यकी सरणी कैसी होनी चाहिये सो जानतेही हैं।

नित्यकर्मोपदेशः 1.

संस्कृत.	हिंदी.
१ प्रतिदिवसं ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्।	१ प्रति दिन ब्राह्म मुहूर्तमें उठे।
२ गुरुदेवतादीन् स्मृत्वा नमस्कारं कुर्यात्।	२ गुरु देवता आदिकोंका स्मरण कर प्रणाम करे।
३ पश्चात् यज्ञोपवीतं दक्षिणकर्णे निधाय जलपूर्णकुम्भं गृहीत्वा दक्षिणस्यां दिशि विविक्तदेशं गन्तव्यम्।	३ पीछे दहिने कानपर जनेऊको रख जलसे भरे हुए लोटेको ले दक्षिणदिशाकी ओर निर्जनस्थानको जावे।
४ तत्र उपविश्य अधोमुखः सन् तृणाच्छादितायां भूमौ हदेत।	४ तहां बैठके अधोमुख हो तिनोंसे ढांपी हुई पृथ्वीपर झाडा (शौच) करे।
५ ततः मृत्तिकया विलिप्य अपानद्वारं जलेन प्रमृज्यात्।	५ पीछे मिट्टीसे लेपन कर अपानद्वारको जलसे धोवे।
६ अनन्तरं हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य दन्तधावनमाचरेत्।	६ पीछे हाथों [और] पैरोंको धोकर दंतशुद्धि करे।

७ एवं मुखशोधनं गण्डूषैः कुर्वीत।	७ इस प्रकार कुल्लोंसे मुखशुद्धि करे।
८ यावत् मुखशोधनं न भवति तावत् केनापि समं न ब्रूयात्।	८ जबतक मुँहकी शुद्धि नहीं हो तबतक किसीके साथ नहीं बोले।
९ तदनन्तरं नद्यां तटाके कूपे वा शीतजलेन स्नायात्।	९ तिसके पीछे नदीपर [या] तालावपर या कुएंपर ठंढे जलसे स्नान करे।
१० अशक्तौ तु उष्णोदकेन स्नातव्यम्।	१० शक्ति न हो तो गरम पानीसे स्नान करे।
११ ततः परं धौतवस्त्रं परिदधीत।	११ उसके पीछे धोये हुए कपडेको पहिरे।
१२ पश्चात् ललाटे भस्म गोपीचन्दनं वा धरेत्।	१२ पीछे भालपर भस्म या गोपीचंदनको लगावे।
१३ प्रातःसंध्यां च उपासीत।	१३ और प्रातःसंध्याकी उपासना करे।
१४ षोडशोपचारैः देवपूजां कुर्वीत।	१४ सोलह उपचारोंसे देवतापूजन करे।
१५ ततः देवतर्पणं ऋषितर्पणं च कार्यम्।	१५ पीछे देवताओंका तर्पण और ऋषियोंका तर्पण करना.
१६ पितृमरणानन्तरं पितृतर्पणमपि करणीयम्।	१६ पिता मरनेपर पितरोंकाभी तर्पण करना।
१७ पाके निष्पन्ने वैश्वदेवं विदध्यात्।	१७ रसोई सिद्ध होनेपर वैश्वदेव करे।
१८ आगतान् अतिथीन् समर्चयेत्।	१८ आये हुए अतिथियोंका पूजन करे।
१९ तदनन्तरं देवताभ्यः पक्वान्नसमर्पणं कुर्यात्।	१९ पीछे देवताओंको पके हुए अन्नका समर्पण करे।

२० ततः स्वपरिवारेण सहितः चतुर्विधम् अन्नं भुञ्जीत ।	२० अनंतर अपने परिवारके सहित चार प्रकारके अन्नको खावे ।
२१ भोजनानन्तरं पाणी मुखं पादौ च प्रक्षाल्य आचामेत् ।	२१ भोजन होनेके पीछे हाथों, मुख और पांवोंको धोकर आचमन करे ।
२२ अतिथिभ्यः ताम्बूलं दत्त्वा स्वयं भक्षयेत् ।	२२ अतिथियोंको तांबूल दे आप भक्षण करे ।
२३ एवं सायमपि सन्ध्यां देवस्य पंचोपचारपूजां च विधाय भुञ्ज्यात् ।	२३ इस प्रकार सांझमेंभी संध्या और देवकी पंचोपचार पूजा कर भोजन करे ।
२४ दिवा द्विवारं न अभ्यवहरेत् ।	२४ दिनमें दो बार भोजन नहीं करे ।
२५ दिवा स्त्रीसङ्गः शास्त्रे निषिद्धः ।	२५ दिनमें स्त्रीका संग शास्त्रमें निषिद्ध है ।
२६ इति शिष्टानां प्रक्रिया प्रचलति ।	२६ ऐसी शिष्टोंकी रीति चलती है ।
२७ एवं सामान्यकृत्यस्य उपदेशः समाप्तः ।	२७ ऐसा साधारण कर्मोंका उपदेश समाप्त हुआ ।

स्वभावोपदेशः २.

संस्कृत.	हिंदी.
१ गुरुः शिष्यान् पाठयति ।	१ गुरु शिष्योंको पढाता है ।
२ छात्राः अभ्यस्यन्ति ।	२ विद्यार्थी अभ्यास करते हैं ।
३ पान्थो याति ।	३ बटोही जाता है ।
४ वेत्रधराः स्तेनं गवेषयन्ति ।	४ पोलीस सिपाही चोरको खोजते हैं ।
५ वादी अभ्यर्थनां करोति ।	५ वादी अर्ज करता है ।

६ प्रतिवादी ब्रूते मतसमर्थकम्।	६ प्रतिवादी वकीलको बोलता है।
७ अधिकरणं प्रति यात।	७ कचहरीको चलो।
८ मम पक्षः अवश्यं समर्थ्यताम्।	८ मेरा पक्ष जरूर प्रतिपादन करना।
९ अभ्यर्थनायाः इयं प्रतिच्छायास्ति।	९ अरजकी यह नकल है।
१० न्यायाधीशः न्यायं करोति।	१० इनसाफ करनेवाला इनसाफ करता है।
११ साक्षिणः पृच्छति।	११ गवाही देनेवालोंको प्रश्न करता है।
१२ निर्णयं कथयति।	१२ फैसला कहता है।
१३ स्तेनं बध्नन्ति।	१३ चोरको बांधते हैं।
१४ तं च कारागृहे स्थापयन्ति।	१४ उसको कैदखानेमें रखते हैं।
१५ साधवः उपकुर्वते।	१५ साधु [लोग] उपकार करते हैं।
१६ दुष्टाः प्राणिनः हिंसन्ति।	१६ दुष्ट [लोग] प्राणियोंको घायल करते हैं।
१७ नर्मकथाभिः तुष्यति राजा।	१७ ठट्टाकी बातोंसे राजा खुश होता है।
१८ पादाभ्यां गच्छति।	१८ पैरोंसे जाता है।
१९ वाचा वदति।	१९ वाणीसे बोलता है।
२० हस्तेन भुंक्ते।	२० हाथसे जेमता है।
२१ नेत्राभ्यां पश्यति।	२१ आखोंसे देखता है।
२२ कर्णाभ्यां श्रृणोति।	२२ कानोंसे सुनता है।
२३ त्वचा स्पृशति।	२३ त्वचासे स्पर्श करता है।
२४ नासिकया जिघ्रति।	२४ नाकसे सूंघता है।
२५ जिह्वया लेढि।	२५ जीभसे चाटता है।

२६ धीरो धैर्यं न मुञ्चति ।	२६ विद्वान् धैर्यको नहीं छोडता ।
२७ धनिकः व्यापारं कुरुते ।	२७ द्रव्यवान् (सेठ) व्यापार करता है ।
२८ व्यापारेण लक्ष्मीः वर्धते ।	२८ व्यापारसे लक्ष्मी बढती है ।
२९ भृत्यः वेतनं गृह्णाति ।	२९ टहलुआ (नौकर) पगार (मजूरी) लेता है ।
३० विद्यया विनय उत्पद्यते ।	३० विद्यासे विनय उत्पन्न होता है ।
३१ विनयेन महत्त्वं जायते ।	३१ विनयसे बडापन होता है ।
३२ महत्त्वेन धनं लभते ।	३२ बडेपनसे द्रव्यको प्राप्त होता है ।
३३ धनेन सर्वं सिद्ध्यति ।	३३ धनसे सब सिद्ध होता है ।
३४ सुवर्णकारः अलंकारान्निर्मिमीते ।	३४ सुनार गहनोंको बनाता है ।
३५ उद्योगिनः यतन्ते ।	३५ धंधेवाले (लोग) प्रयत्न करते हैं ।
३६ प्रतिदिनं भुंक्ते ।	३६ दिन दिन जेमता है ।
३७ वृक्षान् सिञ्चति मालाकारः।	३७ पेडोंको माली सींचता है ।
३८ रथकारः गेहं रचयति ।	३८ बढई घरको बनाता है ।
३९ चित्रकारः भित्तौ आलेख्यानि अलिखत् ।	३९ चितेरा भींतपर तसवीरोंको लिखता (खींचता) भया ।
४० कुम्भकारो मृत्तिकां मर्दयति।	४० कुह्मार मिट्टीको कूटता है ।
४१ आदित्यः उदयति ।	४१ सूर्य उगता है ।
४२ प्रकाशेन तमः ध्वंसते ।	४२ रौशनी (तेज) से अंधेरा नष्ट होता है ।
४३ शुक्लपक्षे निशाकरः विवर्द्धते।	४३ शुक्लपक्षमें चांद बढता है ।
४४ कृष्णपक्षे क्षिणोति ।	४४ कृष्णपक्षमें क्षीण (कम) होता है ।

४५ मेघो वर्षति ।	४५ बादल बरसता है ।
४६ वातो वहति ।	४६ वायु वहता है ।
४७ जलं नीचैः गच्छति ।	४७ जल नीचे जाता है ।
४८ राजानो युध्यन्ते ।	४८ राजा [लोग] लडते हैं ।
४९ कुविन्दः अंशुकानि वयते ।	४९ जुलाहा कपडोंको बुनता है।
५० चन्द्रमसः उदयकाले अस्त-काले च समुद्रो विवर्धते ।	५० चांदके उगनेके समय और अस्तके समय दर्या बढता है।
५१ तुन्दिलः स्वपिति ।	५१ त्वँदार (बडे पेटवाला) सोता है ।
५२ खगाः उड्डीय अटन्ति ।	५२ पच्छी उडके फिरते हैं ।
५३ गोपालाः गाः रक्षन्ति ।	५३ अहीर गौओंका रक्षण करते हैं ।
५४ अर्भकाः रुदन्ति ।	५४ लडके रोते हैं ।
५५ शुकः फलम् अत्ति ।	५५ तोता फलको खाता है ।
५६ द्विजाः संध्याम् उपासते ।	५६ ब्राह्मण संध्याको उपासते (करते) हैं ।
५७ हस्ती अङ्गानि कण्डूयते ।	५७ हाथी अंगोंको खुजाता है।
५८ पश्य मृगो धावति ।	५८ देख, हरिण दौडता है ।
५९ कथिकाः कथाम् उप-दिशन्ति ।	५९ कहानी कहनेवाले कहानी कहते हैं ।
६० शस्त्रेण छिनत्ति ।	६० हथियारसे काटता है ।
६१ नागदन्तकोपर्युष्णीषं निद-धाति ।	६१ खूंटापर पगडीको रखता है।
६२ आदर्शे प्रतिबिम्बं दृश्यते ।	६२ ऐनेमें प्रतिबिंब दीखता है।
६३ मार्जारो मूषकेण सह स्प-र्धते ।	६३ बिल्ली चूहेके साथ स्पर्धा करती है ।
६४ इति स्वभावोपदेशः समाप्तः।	६४ इस प्रकार स्वभावका उपदेश [समाप्त ।

विद्यार्थिसंवादोपदेशः ३.

संस्कृत.	हिंदी.
१ एतावत्कालं गृहे एव त्वं किं करोषि ?	१ इतने कालतक घरमेंही तू क्या करता है ?
२ दश वादिताः केरलाः ।	२ दस घंटे बजे ।
३ झटिति बहिः निर्गच्छ ।	३ झट बाहिर निकल ।
४ अद्य विलम्बो भविष्यति ।	४ आज देर होगी ।
५ अहं तु गच्छामि ।	५ मैं तो जाता हूं ।
६ अहमपि आगच्छामि ।	६ मैंभी आता हूं ।
७ भोजनादिकं मम सर्वं कर्म संवृत्तमस्ति ।	७ भोजन आदिक मेरा सब काम हुआ है ।
८ सर्वम् उपकरणं गृहीत्वा आगतोऽहं, संप्रति शीघ्रं गच्छ ।	८ सब सामग्री लेके मैं आया, अब जलदी चल ।
९ चतुष्पथे कोऽयं स्थितः ?	९ चौहटेपर यह कौन रहा है ?
१० अरे भानुदत्त, तवापि अद्य कुतः विलम्बोऽभूत् ?	१० अरे भानुदत्त ! तुझेभी आज क्यों देर हुई ?
११ अद्य गुरुः अस्मान् ताडयिष्यति ।	११ आज गुरु हमको मारेगा ।
१२ मया अभ्यासोऽपि न अकारि ।	१२ मैंने अभ्यासभी नहीं किया है ।
१३ त्वया अभ्यासः कृतः कच्चित् ?	१३ तूने अभ्यास किया क्या ?
१४ मम पाठस्तु दृढः समभवत् ।	१४ मेरा पाठ तो दृढ हुआ है ।
१५ अद्य भवन्तम् उपदिशामि ।	१५ आज तुझे उपदेश करता हूं ।
१६ प्रतिदिनं अभ्यासः कार्यः ।	१६ दर रोज अभ्यास करना चाहिये ।

१७ तेन ते विद्या सज्जा भविष्यति ।	१७ तिससे तेरी विद्या तैयार होगी ।
१८ गुरुसेवां विना विद्या सम्यक् न सिध्यति ।	१८ गुरुकी सेवाके विना उत्तम रीतिसे विद्या सिद्ध नहीं होती ।
१९ तस्मात् भक्त्याऽवश्यं गुरुं सेवेत ।	१९ इससे भक्ति करके अवश्य गुरुको सेवे ।
२० विद्ययापि विद्या भवति ।	२० विद्यासेभी विद्या होती है ।
२१ पुष्कलेन धनेन वा ।	२१ किंवा बहुत द्रव्यसे ।
२२ वयं तु अकिंचनाः स्मः ।	२२ हम तो दरिद्री हैं ।
२३ पाठादानकाले निरर्थकं न वदेत् ।	२३ पाठ लेनेके समय व्यर्थ नहीं बोले ।
२४ गुरोः भाषणं सावधानं शृणुयात् ।	२४ गुरुका बोलना अवधानसहित सुने ।
२५ गुरुं न निन्देत् ।	२५ गुरुकी निंदा न करे ।
२६ गुरौ प्रसन्ने न किमपि दुर्लभम् ।	२६ गुरु संतुष्ट होनेपर कुछभी दुर्लभ नहीं ।
२७ विद्वांसं राजापि मानयति ।	२७ विद्वान्‌को राजाभी मान देता है ।
२८ मत्संनिधौ मषीपात्रं वर्तते परंतु लेखनी न विद्यते ।	२८ मेरे पास दावात तो है पर कलम नहीं है ।
२९ तव पंचमं पुस्तकं क्व वर्तते ?	२९ तेरी पांचवीं पुस्तक कहां है ?
३० देहि मह्यं क्षुरप्रिकां कर्तरीं च ।	३० मुझे चक्कू और कतरनी दे ।
३१ परश्वः त्वद्गृहम् आगन्ताऽहम् ।	३१ परसोंके दिन तेरे घरको मैं आऊंगा ।
३२ अग्रिमे वाराष्टके परीक्षा भवेत् ।	३२ आइंदे हफ्तेमें परीक्षा होगी ।

३३ परीक्षायां दक्षतया स्थातव्यम् ।	३३ परीक्षामें चतुरपनसे रहना ।
३४ कदापि न भेतव्यम् ।	३४ कभी नहीं डरना ।
३५ विचारं कृत्वा, प्रश्नोत्तरं लेखनीयम् ।	३५ विचार करके प्रश्नका उत्तर लिखना ।
३६ त्वं परीक्षायामुत्तीर्णो भविष्यसि ।	३६ तू परीक्षामें पास होगा ।
३७ पञ्चमकक्षायां काठिन्यं न किमपि ।	३७ पांचवीं इयत्तामें कुछभी कठिनपन नहीं ।
३८ शालाव्यवस्थापकः स्वयमेव परीक्षायै आगमिष्यति, इति मया श्रुतम् ।	३८ शालाकी व्यवस्था करनेवाला (इन्स्पेक्टर) आपही परीक्षाके लिये आवेगा, ऐसा मैंने सुना [है] ।
३९ अयं यष्टिधरः कुत आगच्छति ?	३९ यह सिपाही कहांसे आता है ?
४० किमरे, उद्घाटिता शाला ?	४० क्यों रे, शाला खोली ?
४१ केनचित् कारणेन अद्य अधिकारिणा विरामः अदायि ।	४१ किसी कारणसे आज अधिकारीने रजा दी है ।
४२ अतः उद्घाटय पुनः मया पिहिता ।	४२ इसीसे खोलकर फिर मैंने मूंदी ।
४३ तस्मात् निवर्तध्वं यूयम् ।	४३ इस कारण तुम लौटो ।
४४ इयं मदीया उपानत् छिन्ना वर्तते ।	४४ यह मेरा जूता (जोडा) फटा है ।
४५ कदा अन्या क्रेतव्या ?	४५ कब दूसरा खरीदना ?
४६ अद्यतनः एव दिवसो योग्यः।	४६ आजकाही दिन योग्य है ।
४७ चर्मकारगृहं समीपमेव अस्ति ।	४७ चमारका घर पासही है ।

४८ इदं मम पुस्तकं पटमञ्जूषिकायां निधेहि ।	४८ यह मेरा पुस्तक पाकिटमें रख ।
४९ सायं गणितोदाहरणाचिन्तनाय अवश्यम् आयाहि ।	४९ सायंकालमें गणितके उदाहरणके सोचनके अर्थ अवश्य आ ।
५० इति विद्यार्थिसंवादोपदेशः समाप्तः ।	५० इस प्रकार विद्यार्थियोंके संवादका उपदेश समाप्त हुआ ।

दिगुपदेशः ४.

संस्कृत.	हिंदी.
१ उदयाचलसंनिहिता या दिक् सा पूर्वा इति उच्यते ।	१ उदयपर्वतके पास होनेवाली जो दिशा सो पूर्व ऐसा कहा जाता है ।
२ तस्याः अधिपः इन्द्रः ।	२ उसका मालिक इंद्र [है] ।
३ तत्रैव ऐरावतो नाम गजः तिष्ठति ।	३ तहांही ऐरावत नामका हाथी रहाता है ।
४ अस्ताचलसंनिहिता या दिशा सा पश्चिमा ।	४ अस्ताचलके पास होनेवाली जो दिशा सो पश्चिम ।
५ तस्याः राजा वरुणः ।	५ उसका राजा वरुण [है] ।
६ तस्याम् अञ्जननामा हस्ती वसति ।	६ तहां अंजन नामका हाथी रहता है ।
७ मेरोः समीपस्था काष्ठा उत्तरा ।	७ मेरुके पास होनेवाली दिशा उत्तर ।
८ तस्याः राजा धनदः ।	८ उसका मालिक कुबेर [है] ।
९ तस्यां सार्वभौमाभिधेयः दन्ती वर्तते ।	९ तहां सार्वभौम नामवाला हाथी रहता है ।

१० मेरोः व्यवहिता या आशा सा दक्षिणा ।

११ तस्यां धर्मराजः राज्यं करोति ।

१२ तत्रैव वामननामकः करी निवसति ।

१३ दक्षिणपूर्वयोः मध्यगता ककुप् आग्नेयी इति अभिदधते ।

१४ तस्याः राजा अग्निः ।

१५ पुण्डरीकेण हस्तिना सा दिक् अधिष्ठिता ।

१६ दक्षिणपश्चिमयोर्मध्ये वर्तमाना दिक् नैर्ऋती ।

१७ तां निर्ऋतिनामा निशाचरः पालयति ।

१८ कुमुदनामा हस्ती तत्र प्रतिवसति ।

१९ पश्चिमोत्तरयोः मध्यस्थायाः दिशः नाम वायवी इति अस्ति ।

२० तस्याः आधिपत्यं वायुना स्वीकृतम् ।

२१ पुष्पदन्तः तत्र स्थितः ।

२२ पूर्वोत्तरयोः मध्ये भवा दिक् ऐशानी इति अभिधीयते ।

१० मेरुसे व्यवहित (व्यवधानसहित, दूर) जो दिशा सो दक्षिण ।

११ तहां यम राज्य करता है ।

१२ तहांही वामन नामवाला हाथी रहता है ।

१३ दक्षिण पूर्वके बीचमें होनेवाली दिशा आग्नेयी, इस प्रकार कहते हैं ।

१४ उसका मालिक अग्नि [है]।

१५ पुण्डरीक हाथीने वह दिशा अधिष्ठित (स्थान की) है।

१६ दक्षिण पश्चिमके बीचमें रहनेवाली दिशा नैर्ऋती(है)।

१७ उसको निर्ऋति नामका राक्षस पालता है ।

१८ कुमुद नामक हाथी तहां रहता है ।

१९ पश्चिम उत्तरके बीच होनेवाली दिशाका नाम वायवी ऐसा है ।

२० उसका मालिकपन वायुने स्वाधीन रखा है ।

२१ तहां पुष्पदंत(हाथी)रहा है।

२२ पूर्व-उत्तरके बीचमें होनेवाली दिशा ऐशानी ऐसी कहलाती है ।

२३ तस्याः अधिपस्य नाम ईशानः इति प्रसिद्धम् अस्ति।
२४ तस्यां वर्तमानस्य गजस्य नाम सुप्रतीकः ।
२५ एते एव अष्टौ दिग्गजाः सन्ति ।
२६ उपरिभवा दिक् ऊर्ध्वदिशा इति कथ्यते ।
२७ तस्याः अधिपतिः ब्रह्मा ।
२८ अधोभूतायाः दिशः नाम अधरदिशा इति ।
२९ ताम् अनन्तः रक्षति ।
३० एता एव दश दिशाःसन्ति।
३१ द्विजाः सन्ध्याकाले दश दिशः नमस्कुर्वन्ति ।
३२ पूर्वाभिमुखः अथवोत्तराभिमुखः पूजादि शुभकृत्यं कुर्यात् ।
३३ अस्य यदि असंभवः स्यात्तदैशान्यभिमुखः शुभकर्म समाचरेत् ।
३४ इतराः सर्वदिशाः निन्द्याः कथिताः ।
३५ विशेषतः दक्षिणा पश्चिमा च मङ्गलकर्माणि निन्दिते स्तः।

२३ उसके मालिकका नाम ईशान ऐसा प्रसिद्ध है ।
२४ तहां रहनेवाले हाथीका नाम सुप्रतीक (है) ।
२५ येही आठ दिशाओंके हाथी हैं ।
२६ ऊपर होनेवाली दिशा ऊर्ध्वदिशा ऐसा कहा जाता है।
२७ उसका राजा ब्रह्मदेव ।
२८ नीचे होनेवाली दिशाका नाम अधरदिशा ऐसा [है] ।
२९ उसको शेष पालता है ।
३० येही दश दिशायें हैं ।
३१ ब्राह्मण संध्याके समय दश दिशाओंको नमस्कार करते हैं ।
३२ पूर्वके संमुख या उत्तरके संमुख [हो] पूजा आदि मंगल कार्य करे ।
३३ इसका यदि संभव न होवे तो ऐशानीदिशाके संमुख [होके] सत्कर्म करे ।
३४ अन्य सब दिशायें निंद्य कही गई हैं ।
३५ विशेष करके दक्षिण और पश्चिम शुभकार्यके विषे निंदित हैं ।

३६ दक्षिणस्यां दीपस्य मुखं न कार्यम् ।	३६ दक्षिण दिशाकी ओर दीयाका मुँह नहीं करना ।
३७ दक्षिणस्यां पादौ कृत्वा न शयीत ।	३७ दक्षिणकी ओर पैरोंको कर नहीं सोवे ।
३८ एवं दिशामुपदेशः समाप्तः अभूत्	३८ इस प्रकार दिशाओंका उपदेश समाप्त हुआ ।

कालोपदेशः ५.

संस्कृत.	हिंदी.
१ अष्टादशभिः निमेषैः एका काष्ठा भवति ।	१ अठारह निमेषों (पलक मारने) से एक काष्ठा होती है ।
२ त्रिंशत्काष्ठाभिः कला जायते।	२ तीस काष्ठाओंसे कला होती है ।
३ त्रिंशत्कलाभिः क्षणः संपद्यते ।	३ तीस कलाओंसे क्षण होता है ।
४ द्वादशभिः क्षणैः एको मुहूर्तः ।	४ बारह क्षणोंसे एक मुहूर्त [होता है] ।
५ एवं षष्ट्या पलैः एका घटिका निष्पद्यते ।	५ इस प्रकार साठ पलोंसे एक घटिका होती है ।
६ द्वाभ्यां घटिकाभ्याम् एको मुहूर्तः ।	६ दो घटिकाओंसे एक मुहूर्त ।
७ त्रिंशन्मुहूर्तैः एकः अहोरात्रः ।	७ तीस मुहूर्तोंसे एक अहोरात्र ।
८ अष्टभिः अहोरात्रैः एकं वाराष्टकम् ।	८ आठ अहोरात्रोंसे एक हफ्ता ।
९ द्वाभ्यां वाराष्टकाभ्यामेकः पक्षः ।	९ दो हफ्तोंसे एक पखवाडा ।

१० द्वाभ्यां पक्षाभ्याम् एको मासः ।	१० दो पखवाडोंसे एक महीना।
११ द्वाभ्यां मासाभ्याम् एकः ऋतुः ।	११ दो महीनोंसे एक ऋतु ।
१२ त्रिभिः ऋतुभिः एकमयनम्।	१२ तीन ऋतुओंसे एक अयन [होता है]।
१३ द्वाभ्यामयनाभ्यां वर्षं जायते ।	१३ दो अयनोंसे बरस होता है ।
१४ मासाः द्वादश सन्ति ।	१४ महीने बारह हैं ।
१५ चैत्रः १, वैशाखः २, ज्येष्ठः ३, आषाढः ४, श्रावणः ५, भाद्रपदः ६, आश्विनः ७, कार्तिकः ८, मार्गशीर्षः ९, पौषः १०, माघः ११, फाल्गुनः १२, इति तु तेषां क्रमः।	१५ चैत्र १, वैशाख २, ज्येष्ठ ३, आषाढ ४, श्रावण ५, भाद्रपद ६, आश्विन ७, कार्तिक ८, मार्गशीर्ष ९, पौष १०, माघ ११, फाल्गुन १२, ऐसा तो उनका क्रम [है]।
१६ ऋतवः षट् विद्यन्ते ।	१६ ऋतु छः हैं ।
१७ चैत्रवैशाखौ वसन्तर्तुः १, ज्येष्ठाषाढौ ग्रीष्मः २, श्रावणभाद्रपदौ वर्षा ३, आश्विनकार्तिकौ शरत् ४, मार्गशीर्षपौषौ हेमंतः ५, माघफाल्गुनौ शिशिरऋतुः ६ ।	१७ चैत्र वैशाख-वसंतऋतु १, ज्येष्ठ आषाढ-ग्रीष्म २, श्रावण भाद्रपद-वर्षा ३, आश्विन कार्तिक-शरत् ४, मार्गशीर्ष पौष-हेमंत ५, माघ फाल्गुन-शिशिरऋतु६।
१८ वाराः सप्त सन्ति ।	१८ वार सात हैं ।
१९ रविः १, सोमः २ भौमः ३, बुधः ४, गुरुः ५, शुक्रः ६, शनिश्च ७ ।	१९ रवि १, सोम २ भौम ३, बुध ४, बृहस्पति ५, शुक्र ६ और शनि (वार) ७ ।
२० शुक्लपक्षः, कृष्णपक्षः च इति द्विविधः पक्षः ।	२० शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष ऐसे दो प्रकारका पक्ष है ।

२१ उत्तरायणं दक्षिणायनं चेति द्विप्रकारकम् अयनम् ।

२२ मनुष्याणाम् एको मास एव पितॄणाम् अहोरात्रः ।

२३ तत्र कृष्णपक्षः दिवसः, शुक्लपक्षो रात्रिश्चास्ति ।

२४ एवमेव मनुष्याणाम् एकं वर्षं देवानाम् एकः अहोरात्रः भवति ।

२५ तत्र उत्तरायणं दिनं, दक्षिणायनं च रात्रिरस्ति ।

२६ तिथयः पञ्चदश सन्ति ।

२७ योगाः सप्तविंशतिः ।

२८ करणानि सप्त ।

२९ संक्रान्तयः द्वादश सन्ति, तत्र मकरसंक्रान्तिः कर्कसंक्रान्तिश्च एते द्वे अयनसंक्रान्ती ।

३० कर्कसंक्रान्तिमारभ्य आमकरसंक्रांति दक्षिणायनम्, एवं मकरसंक्रान्तिमारभ्य कर्कसंक्रमणपर्यन्तम् उत्तरायणम् ।

३१ राशयः द्वादश सन्ति, ते च इत्थं, मेषः १, वृषभः २, मिथुनं ३, कर्कः ४ सिंहः ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिकः

२१ उत्तरायण और दक्षिणायन ऐसा दो प्रकारका अयन है।

२२ मनुष्योंका एक मासही पितरोंका अहोरात्र (होता है)।

२३ तिसमें कृष्णपक्ष दिन और शुक्लपक्ष रात है।

२४ इस प्रकारही मनुष्योंका एक वर्ष देवताओंका एक अहोरात्र होता है।

२५ तिसमें उत्तरायण दिन और दक्षिणायन रात है।

२६ तिथियां पंद्रह हैं।

२७ योग सत्ताईस (हैं)।

२८ करण सात (हैं)।

२९ संक्रांति बारह हैं, तिसमें मकरसंक्रांति और कर्कसंक्रांति ये दो अयनसंक्राति (हैं)।

३० कर्कसंक्रांतिसे आरंभ कर मकरसंक्रांतितक दक्षिणायन (है), इस प्रकार मकरसंक्रांतिसे आरंभ कर कर्कसंक्रांतितक उत्तरायण(है)।

३१ राशि बारह हैं, वे ऐसे, मेष १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, धन ९, मकर

८, धनुः ९, मकरः १०, कुम्भः ११, मीनश्च १२ ।

३२ ग्रहाः नव सन्ति, ते च रव्यादयः सप्त, राहुः केतुश्च एतौ द्वौ ।

३३ तत्र रविः बुधः शुक्रश्चैते त्रयः एकैकेन मासेन एकैकं राशिं भुञ्जन्ति ।

३४ गुरुः एकाब्देन एकं राशिं भुंक्ते ।

३५ भौमः सार्धमासेन एकं राशिं भुंक्ते ।

३६ इन्दुः सपाददिवसद्वयेन एकं राशिं भुनक्ति ।

३७ शनैश्चरः सार्धवर्षद्वयेन एकैकं राशिम् उपभुंक्ते ।

३८ राहुकेतू सार्धाब्देन एकैकं राशिं भुंक्तः ।

३९ क्वचित्तु विंशतिमासेन उपभुंजाते इति लिखितम् ।

४० रविभौमशनिवाराः पापवाराः उक्ताः ।

४१ सोमबुधगुरुशुक्रवाराः एते शुभाः सन्ति ।

४२ रविशनिभौमवारेषु श्मश्रुकर्मणो निषेधोऽस्ति ।

१०, कुंभ ११ और मीन १२ ऐसा इनका क्रम है ।

३२ ग्रह नौ हैं, वे तो सूर्य आदि सात और राहु केतु ये दो ।

३३ तिसमें सूर्य, बुध और शुक्र ये तीन एक एक महीनेमें एक एक राशिको भोगते हैं ।

३४ बृहस्पति एक बरसमें एक राशिको भोगता है ।

३५ मंगल डेढ महीनेमें एक राशिको भोगता है ।

३६ चांद सवा दो दिवसों (अठारह पहरों) में एक राशिको भोगता है ।

३७ शनि अढाई बरसोंमें एक एक राशिको भोगता है ।

३८ राहु (और) केतु डेढ बरसमें एक एक राशिको भोगते हैं ।

३९ कहीं बीस महीनोंमें भोगते हैं ऐसा लिखा है ।

४० रवि, मंगल (और) शनिवार पाप वार कहे हैं ।

४१ सोम, बुध, बृहस्पति (और) शुक्र ये वार शुभ हैं ।

४२ रवि शनि और मंगलवारके दिन हजामतका निषेध है ।

४३ श्मश्रुकर्मणि चतुर्थीं, षष्ठीं, अष्टमीं, नवमीं, एकादशीं, चतुर्दशीं, पूर्णिमाम् अमावास्यां च वर्जयेत् ।	४३ हजामतके विषें चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, एकादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्याको वर्ज करे ।
४४ शनिवारे अभ्यङ्गस्नानकर्म लक्ष्मीं वर्धयति ।	४४ शनिवारके दिन मालिस करके स्नान करना लक्ष्मीको बढाता है ।
४५ इति कालोपदेशः समाप्तः ।	४५ इस प्रकार कालका उपदेश समाप्त हुआ ।

गृहवृत्तोपदेशः ६.

संस्कृत.	हिंदी.
१ श्रीमन्तो जनाः गृहे सुखेन तिष्ठन्ति ।	१ श्रीमान् लोग घरमें सुखसे रहते हैं ।
२ अद्य मम भृत्यः कं ग्रामं गतः ?	२ आज मेरा चाकर किस गांवको गया ?
३ अस्मिन्नारामे तरूणां पक्वानि पर्णानि पतन्ति ।	३ इस बागमें वृक्षोंके पके हुए पत्ते गिरते हैं ।
४ आलवालान्यपि शुष्काणि सन्ति ।	४ थावलेभी सूखे हैं ।
५ परीवाहे जलस्य बिंदुरपि न दृश्यते ।	५ नहरमें पानीकी बूंदभी नहीं देखी जाती ।
६ घटीयन्त्रं कः पर्यावर्तयेत ?	६ पुरवटको कौन चलावेगा ?
७ अद्य मित्रं समागतम् अतः कारवेल्लान् पटोलानि च गृहीत्वा महानसे स्थापय ।	७ आज मित्र आया है, इसीसे करैला और परवलोंको ले रसोईघरमें रख ।
८ बल्लवः संनिहितो वर्तते किम् ?	८ रसोईदार नजदीक है क्या ?

९ चुल्लीसकाशे अंगारधानिका वर्तते ।	९ चूल्हीके नजदीक अंगेठी है ।
१० सोपाने संदंशं गृहीत्वा क्रीडति बालः ।	१० संडसीको लेकर बालक पैडीपर खेलता है ।
११ गवाक्षात् मञ्चके कङ्कतं पतितम् ।	११ झरोखेसे पलंगपर कंघी गिर गई ।
१२ शय्यायाम् उपधानं वर्तते, तत्र कंदुकं दर्पणं च निधेहि ।	१२ बिछौनेपर तकिया है तहां गेंद और सीसा रख ।
१३ संपुटकं प्रतिग्राहं चात्र आनय ।	१३ चौघडे और पीकदानीको यहां ला ।
१४ व्यजनवायुना पटवासकः इतस्ततः उद्गतः ।	१४ पंखेकी वायुसे बुकवा इधर उधर उड गया ।
१५ चत्वरे मण्डपो न निर्मितः यतः पङ्को वर्तते ।	१५ अंगनमें मंडप नहीं बनाया, इसी कारण कीच(हुआ)है।
१६ दीपः आसनं चैते द्वे अप्यत्र स्तः ।	१६ दीया और आसन ये दोनोंभी यहां हैं ।
१७ अस्य वस्त्रस्य दशाः दीर्घाः सन्ति ।	१७ इस कपडेकी दशियां लंबी हैं ।
१८ अस्मिन् दूष्ये जवनिकां वितानं च पश्यतु भवान् ।	१८ इस तंबूमें परदे और चंदवेको तू देख ।
१९ अयमलंकारः कस्यास्ति ?	१९ यह गहना किसका है ?
२० ग्रैवेयकेण इयं रमणी शोभते।	२० कंठीसे यह स्त्री शोभती है।
२१ तरुण्याः पाणौ अङ्गुलीयकं कङ्कणानि च शोभन्ते ।	२१ तरुण स्त्रीके हाथमें अंगूठी आर कंकण शोभते हैं ।
२२ पादयोः नूपुरौ शोभेते ।	२२ पैरोंमें पायजेब शोभते हैं ।
२३ इयं काञ्ची केन प्राहिता ?	२३ यह करधनी किसने भेजी है?
२४ अयम् उलूखले मुसलेन तण्डुलान् अवहन्ति ।	२४ यह ओखलीमें मूसलसे चांवलोंको कूटता है ।

२५ भ्राष्ट्रे भर्जिताः चणकाः स्वादिष्ठाः भवन्ति ।	२५ खपरीमें भूंजे हुए चने मीठे होते हैं।
२६ शरावोपरि ऋजीषं किमिति निदधासि ?	२६ सरवेके ऊपर तावेको क्यों रखता है ?
२७ कटाहं दर्व्या उत्तारय ।	२७ कढाईको कर्छुलीसे उतार दे।
२८ सर्वाणि पात्राणि अत्रैव सन्ति ।	२८ सब वर्तन यहांही हैं ।
२९ चालन्या धान्यं तुषरहितं भवति ।	२९ चालनीसे धान भूसीसे रहित होता है ।
३० यत्र अधिरोहिणी वर्तते तत्रैव कोणे संमार्जन्या संकरं पुञ्जीकुरु ।	३० जहां सीढी है तहांही कोनेमें बढनीसे कूडेकी राशि कर ।
३१ अपि च तं शूर्पे निधाय दूरं क्षिप ।	३१ और उसको सूपके बीच ले दूर फेंक ।
३२ अन्तर्द्वारे पत्रिका केन स्थापिता ?	३२ खिडकीमें चिट्ठी किसने रखी है ?
३३ अस्मिन् वर्षे पटलं दृढं वर्तते।	३३ इस बरसमें छावना दृढ है ।
३४ चन्द्रशालायां बह्व्यः वस्त्राधान्यो दृश्यन्ते ।	३४ माडीपर बहुत कपडे सुकानेकी लाठियां दीखती हैं ।
३५ द्वारस्य देहल्यां कपाटम् अवलंब्य तिष्ठति ।	३५ दरवाजेके देहलपर केवाडका आलंबन कर रहता है ।
३६ इयं वेदिका सुखावहास्ति, अत्रागम्यताम् उपविश्यतां च।	३६ यह चौतरा सुखकारक है,यहां आइये और बैठिये।
३७ सूदः ओदनं सूपं शाकं च पचति ।	३७ रसोईदार भात दाल और तरकारीको सिझाता है ।
३८ इति गृहवृत्तोपदेशः समाप्तः।	३८ इस प्रकार गृहवृत्तोपदेश समाप्त हुआ ।

अवतारोपदेशः ७.

संस्कृत.	हिंदी.
१ चैत्रशुक्लतृतीयायाम् अपराह्णे भगवान् नारायणः मत्स्यरूपेण अवातरत् ।	१ चैत्रशुक्लतृतीयाके दिन अपराह्णकालमें भगवान् विष्णु मछलीके रूपसे अवतारता भया ।
२ ततः सुरद्वेषिणं शंखासुरं हत्वा सरित्पतेः वेदान् उद्धृतवान् ।	२ पीछे देवोंके शत्रु शंखासुरको मार समुद्रसे वेदोंका उद्धार करता भया ।
३ वैशाखपूर्णिमायां सायं कूर्मावतारो बभूव ।	३ वैशाखपूर्णिमाके दिन सायंकालमें कूर्मावतार भया ।
४ सच देवदैत्यानां सागरमन्थने प्रवृत्ते अधोधो गच्छन्तं मन्दराचलं मन्थानं स्वपृष्ठे दधार ।	४ वह (कछुआ) देवदैत्योंका समुद्रमंथन प्रवृत्त होनेपर नीचे नीचे जाते हुए मंदराचलरूपी रईको अपने पृष्ठपर धरता भया ।
५ भाद्रपदस्य शुक्लतृतीयायाम् अपराह्णे वराहरूपोऽभूत् ।	५ भाद्रपदकी शुक्लतृतीयाके दिन अपराह्णकालमें सूकररूपी हुआ ।
६ तेन हिरण्याक्षनामानं दैत्यं मारयित्वा जले निमग्नायाः मेदिन्याः स्वदंष्ट्रया उद्धारोऽकारि ।	६ उस(सूकर) ने हिरण्याक्ष नाम दैत्यको मार जलमें डूबी हुई पृथ्वीका अपने डाढसे उद्धार किया ।
७ वैशाखशुक्लचतुर्दश्यां सायं नृसिंहः स्तम्भात् प्रादुरभूत् ।	७ वैशाखशुक्लचतुर्दशीके दिन संध्याकालमें नारसिंह खंभसे प्रकट भया ।
८ सतु तत्काल एव स्वनखैः	८ वह तो तत्कालही अपने

हिरण्यकशिपुं विदार्य आत्मभक्तस्य प्रह्लादस्य रक्षणमकार्षीत् ।

नखोंसे हिरण्यकशिपुको फाडकर अपने भक्त प्रह्लादका रक्षण करता भया ।

९ भाद्रपदशुक्लद्वादश्यां मध्याह्ने कश्यपात् अदित्यां वामनः प्रकटीबभूव ।

९ भाद्रपदशुक्लद्वादशीके दिन मध्याह्नसमय कश्यप [ऋषि] से अदितिमें वामन प्रकट भया ।

१० सच इन्द्ररक्षार्थं बलिसन्निधिं गत्वा त्रिपदां भूमिम् अयाचत ।

१० वह इंद्रके रक्षणके वास्ते बलिके पास जा तीन पांव भूमिको मांगता भया ।

११ पश्चात् द्वाभ्यां पादाभ्यां सर्वान् लोकान्व्याप्य तृतीयं पदं बलेः शिरसि निधाय तं सुतले प्रेषयामास ।

११ पीछे दो पैरोंसे सब लोकोंको व्यापकर तीसरे पैरको बलिके शिरपर रखके उसको सुतल [लोक] में भेजता भया ।

१२ वैशाखशुक्लतृतीयायां मध्याह्ने जमदग्निपुत्रः परशुरामः रेणुकायाम् उदपद्यत ।

१२ वैशाखशुक्लतृतीयाके दिन मध्याह्नसमय जमदग्निऋषिका पुत्र परशुराम रेणुकामें उत्पन्न भया ।

१३ सतु पितृहिंसाकारिणं हैहयाधिपम् अहन् ।

१३ वह तो पिताकी हिंसा करनेवाले सहस्रार्जुनको मारता भया ।

१४ तेन च क्रोधवशात् एकविंशतिवारं धरणिः निःक्षत्रिया कृता ।

१४ और उसने क्रोधके आधीन होनेसे इक्कीस वार पृथिवी क्षत्रियरहित की ।

१५ चैत्रशुक्लनवम्यां मध्याह्ने दशरथात् कौशल्यायां श्रीरामचंद्रः आविर्बभूव ।

१५ चैत्रशुक्लनवमीके दिन मध्याह्नसमय दशरथसे कौशल्यामें श्रीरामचंद्र प्रकट भया ।

१६ तस्य भरतः लक्ष्मणः शत्रुघ्नः इति त्रयोऽनुजाः बभूवुः ।	१६ उस (राम) के भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न ऐसे तीन छोटे भाई हुए ।
१७ सच पितुराज्ञया सीतालक्ष्मणाभ्यां साकं वनमयात् ।	१७ वह (राम) पिताकी आज्ञासे सीता और लक्ष्मणके सहित अरण्यको गया ।
१८ तत्र रावणः सीतां जहारः ।	१८ तहां रावण सीताजीको हरता भया ।
१९ अथ रामचन्द्रस्य सुग्रीवः मित्रम् अभूत् ।	१९ अनंतर सुग्रीव रामचंद्रजीका मित्र भया ।
२० ततः वालिनं निहत्य वानरराज्ये सुग्रीवम् अभ्यषिञ्चत् ।	२० पीछे वालिको मार वानरोंके राज्यमें सुग्रीवको अभिषेक करता भया ।
२१ तदनन्तरं हनुमता सीताशुद्धिं कारयित्वा वानरसैन्येन सार्धं लङ्कां गत्वा रावणकुम्भकर्णौ अवधीत्, लक्ष्मणास्त्विन्द्रजितं मारयामास ।	२१ इसके पीछे हनुमान्से सीताका शोध कराके वानरसेनाके साथ लंकाको जा रावण और कुंभकर्णको मारता भया और लक्ष्मण इंद्रजितको मारता भया ।
२२ समनन्तरं सीतया सह अयोध्यामागत्य दशसहस्राणि वर्षाणि धर्मेण प्रजापालनं कृतवान् ।	२२ अनंतर सीताजीके सहित अयोध्याको आकर दश हजार वर्षोंतक धर्मसे प्रजापालन किया ।
२३ श्रावणकृष्णाष्टम्यां निशीथे वसुदेवाद्देवक्यां श्रीकृष्णः प्रादुर्भूतः ।	२३ श्रावणकृष्ण अष्टमीके दिन आधी रातमें वसुदेवसे देवकीमें श्रीकृष्ण प्रकट हुआ ।
२४ श्रावणकृष्णपक्षमेव भाद्र-	२४ श्रावणकृष्णपक्षकोही भाद्र-

पदकृष्णपक्ष इत्युत्तरदेशस्थाः वदन्ति ।

पदकृष्णपक्ष ऐसा उत्तरदेशमें रहनेवाले कहते हैं ।

२५ तेन च कंसं हत्वा कारागृहात् देवकीवसुदेवौ मोचितौ ।

२५ उस (कृष्ण) ने कंसको मारकर बंदीखानेसे देवकी और वसुदेव मुक्त किये ।

२६ एवं बहून् दुष्टान् हत्वा साधुपालनम् व्यरचि ।

२६ इस प्रकार बहुत दुष्टोंको मार साधुओंका पालन किया ।

२७ आश्विनशुक्लदशम्यां सायं बुद्धावतारोऽभूत् ।

२७ आश्विनशुक्लदशमीके दिन सायंकालमें बुद्धावतार भया।

२८ सच असुरान् अधर्मम् उपदिश्य नरके पातयामास ।

२८ वह असुरोंको अधर्मका उपदेश कर नरकमें पटकता भया ।

२९ कलियुगान्ते आश्विनशुक्लषष्ठ्यां सायं कल्किः भविष्यति ।

२९ कलियुगके अंतमें आश्विनशुक्लषष्ठीके दिन सायंकालमें कल्कि होगा ।

३० स च अधार्मिकान् हत्वा कृतयुगं स्थापयिष्यति ।

३० वह अधर्म करनेवालोंको मार कृतयुगकी स्थापना करेगा ।

३१ रामसाहाय्याय रुद्रावतारः मारुतिरभूत् ।

३१ रामजीकी सहायताके अर्थ रुद्रका अवतार हनुमान् भया ।

३२ एतासु तिथिषु कल्याणेच्छुभिः उपोषणं कार्यम् ।

३२ इन तिथियोंमें कल्याण चाहनेवालोंने उपवास करना ।

३३ यस्मिन् काले अवतारः अभूत् तत्कालव्यापिनी तिथिर्व्रताय ग्राह्या ।

३३ जिस कालमें अवतार भया उस कालको व्यापनेवाली तिथि व्रतके लिये लेनी चाहिये ।

३४ एकादश रुद्राः श्रीशिवस्य अवताराः सन्ति ।	३४ ग्यारह रुद्र श्रीशिवजीके अवतार हैं ।
३५ इत्यवतारोपदेशः समाप्तः ।	३५ इस प्रकार अवतारोपदेश समाप्त ।

तरण्यवतारोपदेशः ८.

संस्कृत.	हिंदी.
१ सुहृदा सार्धम् अनलतरणिं प्रेक्षितुं गच्छामि ।	१ मित्रके साथ अगिनबोटको देखनेके लिये जाता हूं ।
२ अस्यां तरण्यां नौकादण्डं गृहीत्वा कर्णधारः किं करोति ?	२ इस नावपर डांडको ले पतवार पकडनेवाला क्या करता है ?
३ अरित्रं विना नौका आयत्ता न भवति ।	३ पतवारके विना नाव आधीन नहीं होती ।
४ अस्यां सांयात्रिकः पोतवाहैः सह किमपि करोति ।	४ इसमें जहाजी खेवैयोंके साथ कुछभी करता है ।
५ आवर्ते प्राप्तः प्लवः प्रायः तत्रैव निमज्जति ।	५ भंवरमें प्राप्त हुआ बेडा बहुताई तहांही डूब जाता है।
६ अये अनलनौकायां गुणवृक्षकस्य किं प्रयोजनम् ?	६ अरे ! अगिनबोटमें मस्तूलका क्या कारण [है] ?
७ अयमत्र धीवरः जालेन झषान् निगृह्णाति ।	७ यह मलाह यहां जालसे मछलियोंको पकडता है ।
८ वर्षाकाले लघ्वीं नौकां सागरे न संचारयन्ति ।	८ वर्षाके समय छोटी नावको समुद्रमें नहीं चलाते ।
९ तस्मिन् काले अतीव बृहती लहरी उद्गच्छति ।	९ तिस कालमें बहुतही बडी लहर उछलती है ।

१० अनलतरणिस्तु सर्वदा संचरति, आंग्लदेशमपि गच्छति ।	१० अगिनबोट तो सब काल चलती है, इग्लंडकोभी जाती है ।
११ तस्याः आतरस्तु महान् वर्तते ।	११ उसका खेवा तो बडा है ।
१२ अग्निरथावतारोऽपि अत्र वर्तते ।	१२ स्टेशनभी (रेलगड्डीका ठाना) यहां है ।
१३ तन्त्रीयन्त्रेण वार्ता द्रुतं ज्ञायते ।	१३ तारायंत्रसे वार्ता शीघ्र जानी जाती है ।
१४ अग्निरथस्येदं बाष्पयन्त्रमस्ति ।	१४ यह रेलगड्डीका इंजन (दमकल) है ।
१५ किम् आपणे जिगमिषास्ति ? अयं संनिहित एव विद्यते ।	१५ क्यों बजारमें जानेकी इच्छा है ? यह नजदीकही है ।
१६ समन्ततः पण्यवीथिकाः प्रेक्षस्व ।	१६ चारों ओर दूकानोंकी पांतियोंको देख ।
१७ इयं पात्राणां पण्यशाला अस्ति ।	१७ यह बर्तनोंका दुकान है ।
१८ ऋय्याधानिकायां महाव्यापारो भवति ।	१८ वखारमें थोक व्यापार (लेन-देन) होता है ।
१९ अत्र पणं कलां पादम् अर्धरूप्यं रूप्यं वा गृहीत्वा न किमपि विक्रीणन्ति ।	१९ यहां पैसा, आना, चौअन्नी अठन्नी या रुपैयाको ले कुछभी नहीं बेचते हैं ।
२० तर्हि अत्र कुडवः, प्रस्थः, आढकः इत्यादीनि परिमाणानि किमर्थं स्थापितानि ?	२० तो यहां पावसेर, सेर, पायली इत्यादिक माप किस कारण रक्खे हैं ?
२१ स्यात् किमपि अन्यत् कारणम् ।	२१ कुछभी दूसरा कारण होगा ।

२२ इदं पत्रिकालयं नवीनं निबद्धम् ।	२२ यह डांकघर (पोस्ट) नया बांधा है ।
२३ श्वोपि अत्र व्यायामाय आगमिष्यामि ।	२३ कलभी यहां व्यायामके वास्ते आऊंगा ।
२४ इति तरण्यवतारोपदेशः समाप्तः अभूत् ।	२४ इस प्रकार बंदरका उपदेश समाप्त हुआ ।

स्वर्गोपदेशः ९.

संस्कृत.	हिंदी.
१ स्वर्गे देवाः वसन्ति ।	१ देव स्वर्गमें रहते हैं ।
२ तेषां राजा इन्द्रः अस्ति ।	२ उनका राजा इंद्र है ।
३ पुण्यवंतो जनाः स्वर्गं गच्छन्ति, तत्र पुण्यबलात् नानाविधं सुखम् उपभुञ्जंते, पुण्यक्षयानन्तरं पुनः मर्त्यलोकं प्राप्नुवन्ति ।	३ पुण्यवान् लोग स्वर्गको जाते हैं, तहां पुण्यके बलसे बहुत प्रकारके सुखको भोगते हैं, पुण्यका नाश होनेपर फिर मृत्युलोकको प्राप्त होते हैं ।
४ स्वर्गप्रदायकं मुख्यं साधनं यज्ञः अस्ति ।	४ स्वर्ग देनेवाला प्रधान (बडा) साधन यज्ञ है ।
५ सत्यलोके चतुराननः तिष्ठति, सच इदं सर्वं जगत् सृजति, तं रजोगुणिनं विद्वांसः वदन्ति, तस्य भार्या सावित्री, पुत्रास्तु नारदाद्याः बहवः सन्ति ।	५ सत्यलोकमें ब्रह्मदेव रहता है, वह इस सब जगत्को रचता है, उसको विद्वान् लोग रजोगुणी कहते हैं, उसकी भार्या सावित्री [है], नारद आदि पुत्र तो बहुत हैं ।
६ वैकुण्ठपुरे नारायणः निवसति, सच सर्वं जगत् रक्षति; तं सत्त्वगुणिनं पण्डिताः	६ वैकुंठनामक पुरमें विष्णु रहता है, वह सब जगत्का पालन करता है, पंडित

कथयन्ति, तस्य भार्या लक्ष्मीः, पुत्रस्तु ब्रह्मा प्रसिद्धोऽस्ति, तं विष्णुः स्वस्य नाभिकमले उत्पादयामास ।

लोग उसको सत्वगुणी कहते हैं, उसकी भार्या लक्ष्मी [है], पुत्र तो ब्रह्मदेव विख्यात है, उस [ब्रह्मा] को विष्णु अपने नाभिकमलमें उत्पन्न करता भया ।

७ शंकरः कैलासम् अध्यास्ते, सच प्रलयसमये सर्वान् लोकान् संहरति, सः तमोगुणी इति ज्ञानिनः ब्रुवन्ति, तस्य भार्या भवानी, गणेशः स्कंदश्च एतौ तस्य पुत्रौ ।

७ महादेव कैलासपर रहता है, वह प्रलयकालमें सब लोगोंको मारता है, वह तमोगुणी इस प्रकार ज्ञानी कहते हैं, उसकी भार्या पार्वती [है], गणपति और कार्तिकस्वामी ये (दो) उसके पुत्र (हैं)।

८ गजाननः अन्तरायान् नाशयति, अत एव सर्वकार्यारम्भे तं स्मरन्ति पूजयन्ति च ।

८ गणपति विघ्नोंको नाशता है, इसीसे सब कर्मोंके आरंभमें उसको स्मरते हैं और पूजते हैं ।

९ गुहः देवानां सेनानायकः अस्ति, सः तारकासुरं जितवान् ।

९ कार्तिकस्वामी देवोंका सेनापति है, वह तारकासुरको जीतता भया ।

१० वाचस्पतिः अमराणां पुरोहितः ।

१० बृहस्पति देवोंका उपाध्याय (है) ।

११ विबुधाः अमृतं पिबन्ति ।

११ देव अमृतको पीते हैं ।

१२ निर्जराः अप्सरोभिः सार्कं नन्दने क्रीडन्ति ।

१२ देव अप्सराओंके साथ नंदन (वन) में क्रीडा करते हैं ।

१३ सुरा अभीष्टं कल्पतरोः प्राप्नुवन्ति, यतः सः इच्छितपदार्थानां दाता वर्तते ।

१३ देव इच्छित (वस्तु) को कल्पवृक्षसे पाते हैं, क्योंकि वह इच्छित वस्तुओंका दाता है ।

१४ यदा देवाः क्षीराम्बुधिं ममन्थुः तदा तस्माद्बहूनि रत्नान्युदपद्यन्त ।	१४ जब देव क्षीरसमुद्रको मंथन करते भये, तब उससे बहुत रत्नें उत्पन्न भईं ।
१५ मन्थनकाले मन्दराचलः मन्थानः अभूत् ।	१५ मन्थनके समय मन्दर पर्वत रई हुआ ।
१६ वासुकिः रज्जुः बभूव ।	१६ वासुकी (नाग) रस्सी भया ।
१७ असुराः अपि मन्थनकर्मणि सहायाः अभूवन् ।	१७ दैत्यभी मंथनकर्ममें सहाय होते भये ।
१८ देवाः एव असुरान् मोहयित्वा सर्वाणि रत्नानि अगृह्णन् ।	१८ देवही दैत्योंको मोहित कर सब रत्नोंको लेते भये ।
१९ दैत्यास्तु सुराम् एव लेभिरे ।	१९ दैत्य तो मदिराकोही प्राप्त होते भये ।
२० प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ?	२० अवश्य मिलनेवाले द्रव्यको मनुष्य प्राप्त होता है.(उसको) देव (भी) नहीं जानता, मनुष्य कहांसे ?
२१ प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षयः संपद्यते ।	२१ किये हुए कर्मोंका नाश भोगसेही होता है ।
२२ अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः ।	२२ स्वर्गेच्छावाला अग्निहोत्रको हवन करे ।
२३ पातकी निरयं गच्छति ।	२३ पापी नरकको जाता है ।
२४ वैष्णवाः विष्णुलोकं यान्ति ।	२४ विष्णुभक्त विष्णुके लोकको जाते हैं ।
२५ शैवाः शिवलोकं प्राप्नुवन्ति ।	२५ शिवभक्त शिवके लोकको प्राप्त होते हैं ।
२६ गाणपत्याः गणपतिपुरमध्यासते ।	२६ गणेशभक्त गणेशके नगरमें रहते हैं ।

२७ सौराः सूर्यपुरीम् अधिति-ष्ठन्ति ।	२७ सूर्यभक्त सूर्यके पुरमें रहते हैं ।
२८ शाक्ताः देवीसंनिधिमधि-गच्छन्ति ।	२८ देवीभक्त देवीके पास जाते हैं ।
२९ सुखस्याऽनन्तरं दुःखं, दुःख-स्याऽनन्तरं सुखम् ।	२९ सुखके पीछे दुःख, दुःखके पीछे सुख ।
३० परब्रह्मोपासकाः तु संसार-बन्धं छित्त्वा मोक्षं लभन्ते ।	३० परब्रह्मकी उपासना करने-वाले तो संसाररूपी बन्धन-को तोड मुक्तिको पाते हैं ।
३१ आत्मज्ञानं विना ब्रह्मोपासना न भवति ।	३१ आत्माका ज्ञान न होनेसे ब्रह्मकी उपासना नहीं होती।
३२ मोक्षं प्राप्य पुनः संसारस-मुद्रं न च आगच्छति ।	३२ मुक्तिको प्राप्त होके फिर संसाररूपी समुद्रमें नहीं आता ।
३३ इदम् अन्यच्च सर्वं पुराण-श्रवणेन ज्ञायते ।	३३ यह और दूसरा सब पुराणके सुननेसे जाना जाता है ।
३४ विष्णुः मधुकैटभौ जघान ।	३४ विष्णु मधुकैटभोंको मारता भया ।
३५ महादेवः त्रिपुरासुरम् अज-यत् ।	३५ शिव त्रिपुरासुरको जीतता भया ।
३६ इन्द्रेण वृत्रासुरः अहन्यत ।	३६ इंद्रने वृत्रासुर मारा ।
३७ शक्तिः महिषासुरम् अम-र्दयत् ।	३७ देवी महिषासुरको मारती भई ।
३८ एवं देवैः दुष्टाः असुराः अ-भिहन्यन्ते ।	३८ इस प्रकार देवोंसे दुष्ट दैत्य मारे जाते हैं ।
३९ इति स्वर्गोपदेशः संपूर्णः अभूत् ।	३९ ऐसा स्वर्गका उपदेश समाप्त हुआ ।

सुभाषितोपदेशः १०.

संस्कृत.

१ अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च साधयेत् । गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ।

२ विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये । आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाऽऽद्रियते सदा ।

३ अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम् । सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ।

४ अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च । वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ।

५ ऋणकर्ता पिता शत्रुर्माता च व्यभिचारिणी । भार्या

हिंदी.

१ अजर-अमरकी नाईं विद्वान् विद्या और द्रव्यको विचारे। [व] मृत्युने बालोंमें पकड लिये हुएकी नाईं धर्मको आचरे ।

२ प्रतिष्ठाके लिये शस्त्रकी [और] शास्त्रकी विद्या [ये] दो विद्यायें हैं । पहिली बूढेपनमें हास्यके लिये [होती है] दूसरी निरंतर [आदमीका] आदर करती है ।

३ बहुत संदेहोंका नाशनेवाला, अदृश्य पदार्थका दिखानेवाला, सबका नेत्र [ऐसा] शास्त्र जिसके नहीं, सो अंधही [है] ।

४ हे राजन् ! धनप्राप्ति, सदा अरोगिपन, सुन्दर और हित बोलनेवाली स्त्री, आधीन पुत्र और धन पैदा करनेवाली विद्या (ये) मनुष्यलोकके छः सुख हैं ।

५ कर्ज करनेवाला पिता वैरी [है], अन्य पुरुषका संग

रूपवती शत्रुः पुत्रः शत्रुरपण्डितः ।

करनेवाली माता वैरी (है), रूपवाली स्त्री वैरी (है) और मूर्ख पुत्र वैरी (है)।

६ अनभ्यासे विषं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम् । विषं सभा दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम् ।

६ अभ्यास न करनेपर विद्या विष (जहर है), अजीर्ण होनेपर भोजन विष (है)। दरिद्रको सभा विष (है, तथा) बूढेको तरुण स्त्री विष (है)।

७ गुणवान् पूज्यते नरः ।

७ गुणवान् आदमी पूजा जाता है ।

८ निर्गुणः किं करिष्यति ?

८ निर्गुणी क्या करेगा ?

९ धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।

९ धर्मसे रहित (पुरुष) पशुके समान (हैं)।

१० अवश्यंभाविनो भावा भवन्ति महतामपि ।

१० अवश्य होनेवाली चेष्टायें बडोंकीभी होती हैं ।

११ यद्भावि न तद्भावि, भावि चेन्न तदन्यथा ।

११ जो न होनेवाला वह नहीं होता, (जो) होनेवाला हो सो विपरीत नहीं (होता)।

१२ न दैवमपि संचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः । अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति ।

१२ प्रारब्धको सोच अपने उद्योगको न छोडे । (क्योंकि), विना यत्नके तिलोंसे तेलको पानेके लिये समर्थ नहीं होता ।

१३ उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।

१३ उद्योगी सिंहसमान पराक्रमी पुरुषको लक्ष्मी प्राप्त होती है ।

१४ यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ?	१४ यत्न करनेपर जो सिद्ध न हो (तो) इसमें क्या दोष?
१५ उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः । न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति सुखे मृगाः ।	१५ उद्योगसेही काम सिद्ध होते हैं, इच्छाओंसे नहीं । सोये हुए सिंहके मुँहमें हरिण नहीं घुसते ।
१६ अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा । यत्रास्ते विषसंसर्गोऽमृतं तदपि मृत्यवे ।	१६ खोटेसे इच्छित (वस्तु) मिलनेपरभी अच्छी दशा नहीं होती । जहां विषका संबंध है वह अमृतभी मृत्युके लिये (है)।
१७ नदीनां शस्त्रपाणीनां नखिनां शृङ्गिणां तथा । विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ।	१७ नदियोंका, जिनके हाथमें शस्त्र है उनका, नखवालोंका, सींगवालोंका, तैसा स्त्रियोंका और राजकुलका विश्वास करना योग्य नहीं ।
१८ लोभः पापस्य कारणम् ।	१८ लोभ पापका कारण (है)।
१९ अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका । तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ।	१९ तुच्छ वस्तुओंका समूहभी कार्य सिद्ध करनेवाला (होता है)। रस्सीपनको प्राप्त हुए तिनकोंसे मतवाले हाथी बांधे जाते हैं ।
२० आपदर्थे धनं रक्षेत् दारान् रक्षेद्धनैरपि । आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि ।	२० आपत्तिके लिये धनकी रक्षा करे, धनसेभी स्त्रियोंकी रक्षा करे, स्त्रियोंसेभी (और) धनोंसेभी सदा अपनी रक्षा करे ।

२१ धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।

२१ ज्ञानी पुरुष पराये अर्थ धन और जीवन छोडे।

२२ विधिरहो बलवानिति मे मतिः।

२२ अहो, भाग्य बलवान्(-है), ऐसी मेरी बुद्धि है।

२३ अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्।

२३ जिसका कुल, स्वभाव न जाना (ऐसे) किसीकोभी स्थान देना योग्य नहीं।

२४ यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः। स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते।

२४ जिसके द्रव्य है सो मनुष्य कुलीन, सो पंडित, सो शास्त्री, गुणोंका परीक्षक, सोही वाकचतुर और सो देखने योग्य (है, क्योंकि) सब (अच्छे) गुण सुवर्णको आश्रयते हैं।

२५ हनुमानब्धिमतरत्, दुष्करं किं महात्मनाम्?

२५ हनुमान्‌जी समुद्रको तरता भया, महात्माओंको क्या दुष्कर (है)?

२६ बहुरत्ना वसुंधरा।

२६ बहुत रत्नोंवाली पृथ्वी(है)।

२७ गजा यत्र न गण्यन्ते मशकानां तु का कथा?

२७ जहां हाथी नहीं गिने जाते, (वहां) झींगरोंकी क्या बात?

२८ विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्। नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्।

२८ विद्वान्‌ही विद्वज्जनोंके श्रमको जानता है। वांझ बडे प्रसूतिदुःखको नहीं जानती।

२९ अन्धेषु काणो राजा हि।

२९ अंधोंमें कानाही राजा।

३० यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।

३० जिसके स्वयं बुद्धि नहीं है, उसे शास्त्र क्या करेगा?

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणं किं करिष्यति ।	आंखोंसे रहित (आदमी) को दर्पण क्या करेगा ?
३१ प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ।	३१ कीचके धोनेकी अपेक्षा दूरसे न छूनाही श्रेष्ठ है ।
३२ इति सुभाषितोपदेशः समाप्तोऽभूत् ।	३२ इस प्रकार सुभाषितका उपदेश समाप्त हुआ ।

कथोपदेशः ११.

संस्कृत.	हिंदी.
१ उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः । शृगालेन हतो हस्ती गच्छता पङ्कवर्त्मना ।	१ जो उपायसे हो सक्ता है सो पराक्रमोंसे नहीं हो सकता। कीचके मार्गसे जाते हुए गीदडने हाथी मारा ।
२ कथमेतत् ?	२ यह कैसा ?
३ अस्ति ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती ।	३ ब्रह्मारण्यमें कर्पूरतिलक नामक हाथी था ।
४ तमवलोक्य सर्वे शृगालाः चिन्तयन्ति स्म ।	४ उसे देखकर सब गीदड सोचने (विचारने) लगे ।
५ यद्ययं केनाप्युपायेन म्रियेत तदाऽस्माकमेतद्देहेन मासचतुष्टयस्य भोजनं भविष्यति ।	५ यदि यह किसी उपायसे मरे, तो हमारा चार महीनोंका भोजन (खाना) होगा।
६ तत्रैकेन वृद्धशृगालेन प्रतिज्ञातम् ।	६ तहां एक बूढे गीदडने प्रतिज्ञा की ।
७ मया बुद्धिप्रभावादस्य मरणं साधयितव्यम् ।	७ मेरी बुद्धिके प्रभावसे इसका मरण अवश्य सिद्ध होगा ।
८ अनन्तरं स वञ्चकः कर्पूर-	८ पीछे वह ठग कर्पूरतिलकके

तिलकसमीपं गत्वा साष्टाङ्गपातं प्रणम्योवाच ।

पास जा आठों अंगोंसे गिर (दंडवत्) प्रणाम कर बोला।

९ देव, दृष्टिप्रसादं कुरु ।

९ (हे) देव, दयादृष्टि कीजिये।

१० हस्ती ब्रूते, कस्त्वं, कुतः समायातः ?

१० हाथी बोला, तू कौन (है), कहांसे आया ?

११ सोऽवदत्, जम्बुकोऽहं, सर्वैर्वनवासिभिः पशुभिर्मिलित्वा भवत्सकाशं प्रस्थापितः ।

११ वह बोला, मैं गीदड हूं, सब वनके रहनेवाले पशुओंने मिलकर आपके पास भेजा है।

१२ यद्विना राज्ञाऽवस्थातुं न युक्तं, तदत्राऽटवीराज्येऽभिषेक्तुं भवान् सर्वस्वामिगुणोपेतो निरूपितः ।

१२ जिस कारण विना राजाके रहना योग्य नहीं, तिस कारण यहां वनके राज्यमें अभिषेकके लिये सब स्वामीके गुणोंसे युक्त आप नियत किये गये हैं ।

१३ तद्यथा लग्नवेला न विचलति, तथा कृत्वा सत्वरम् आगम्यतां देवेन ।

१३ इससे जिस प्रकार लग्नका समय न टले, तैसा करके शीघ्र आप आइये ।

१४ इत्युक्तोत्थाय चलितः ।

१४ ऐसा कह उठकर चला ।

१५ ततोऽसौ राज्यलोभाकृष्टः कर्पूरतिलकः शृगालवर्त्मना धावन् महापङ्के निमग्नः ।

१५ पीछे राज्यके लोभसे आकृष्ट हुआ यह कर्पूरतिलक(हाथी) गीदडके मार्गसे दौडते बडी कीचमें डुबा ।

१६ ततस्तेन हस्तिनोक्तम्, सखे शृगाल, किमधुना विधेयम् ? पङ्के निपतितोऽहं म्रिये, परावृत्य पश्य ।

१६ अनंतर उस हाथीने कहा, मित्र गीदड, अब क्या करना ? कीचमें डुबा हुआ मैं मरता हूं, लौटकर देख ।

१७ शृगालेन विहस्योक्तम्, देव,

१७ गीदड हँसकर बोला, (हे)

मम पुच्छकावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ ।

देव, मेरी, पूंछका सहारा लेकर उठ ।

१८ यन्मद्विधस्य वचसि त्वया प्रत्ययः कृतः, तदनुभूयतामशरणं दुःखम् ।

१८ जिससे मुझ सरीखेके वचनपर तूने विश्वास किया, तिससे अशरण दुःख भोगना चाहिये ।

१९ ततो महापङ्के निमग्नो हस्ती शृगालैर्भक्षितः ।

१९ फिर बडी कीचमें डुबा हाथी गीदडोंसे खाया गया ।

२० अतः 'उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः' इति सिद्धमभूत् ।

२० इसीसे 'उपायसे जो शक्य है सो पराक्रमोंसे शक्य नहीं' ऐसा सिद्ध भया ।

२१ विद्वानेवोपदेष्टव्यो नाऽविद्वांस्तु कदाचन । वानरानुपदिश्याथ स्थानभ्रष्टा ययुः खगाः ।

२१ विद्वानही उपदेश करनेको योग्य (है), मूर्ख कभी नहीं । वानरोंको उपदेश करके पक्षी स्थानसे भ्रष्ट हो गये ।

२२ कथमिदम् ?

२२ यह कैसा ?

२३ अस्ति नर्मदातीरे विशालः शाल्मलीतरुः ।

२३ नर्मदाके किनारेपर बडा सेमरका वृक्ष है ।

२४ तत्र निर्मितनीडक्रोडे पक्षिणो निवसन्ति ।

२४ उसपर बनाये हुए घोंसलोंके अंदर पक्षी सुखसे रहते थे ।

२५ अथैकदा वर्षासु नीलपटलैरावृते नभस्तले धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव ।

२५ तदनंतर एक समय बरसातमें आकाश नीले बादलोंसे आच्छादित होनेपर धाराओंके संपातोंसे बडी वर्षा हुई ।

२६ ततो वानरांश्च तरुतलेऽव-

२६ पीछे वृक्षके नीचे स्थित शी-

स्थितान् शीताकुलान् कम्पमानानवलोक्य कृपया पक्षिभिरुक्तम्, भो भो वानराः, शृणुत ।

तसे पीडित (और) कंपायमान वानरोंको देख कृपासे पक्षियोंने कहा, अहो अहो वानरो ! सुनो ।

२७ अस्माभिर्निर्मिता नीडाश्चञ्चुमात्राहृतैस्तृणैः । हस्तपादादिसंयुक्ता यूयं किमिति सीदथ ।

२७ हमने केवल चोंचसे लाये हुए तृणोंसे घोंसले बनाये (फिर) हाथ पैर आदिसे युक्त तुम क्यों दुःखी हो रहे हैं ?

२८ तच्छ्रुत्वा वानरैर्जातामर्षैरालोचितम् ।

२८ वह सुन क्रोधिष्ठ हुए वानरोंने सोचा ।

२९ अहो, निर्वातनीडगर्भावस्थिताः सुखिनः पक्षिणोऽस्मान्निन्दन्ति, भवतु तावद्वृष्टेरुपशमः ।

२९ अरे ! वायुरहित घोंसलोंके अंदर स्थित, सुखी पक्षी हमको निंदते हैं । तो (पहले) वृष्टिकी शांति हो ।

३० अनन्तरं शांते पानीयवर्षे तैर्वानरैर्वृक्षमारुह्य सर्वे नीडा भग्नाः, तेषाम् अण्डानि चाऽधः पातितानि ।

३० इसके पीछे जलवृष्टि शांत होनेपर उन वानरोंने वृक्षोंपर चढ सब घोंसले तोड डाले, और उनके अंडे नीचे गिरा दिये ।

३१ अस्मात् ' विद्वानेवोपदेष्टव्यो नाऽविद्वांस्तु कदाचन ' एवं निष्पन्नमभवत् ।

३१ इसीसे ' विद्वान्ही उपदेश करनेको योग्य (है) मूर्ख कभी नहीं,ऐसा सिद्ध हुआ ।

३२ इति कथोपदेशः समाप्तिं जगाम ।

३२ इस प्रकार कथाओंका उपदेश समाप्तिको जाता भया ।

षट्शास्त्रोपदेशः १२.

संस्कृत.	हिंदी.
१ षट् शास्त्राणि जगति प्रसिद्धानि सन्ति ।	१ छः शास्त्र जगत् (दुनिया) में प्रसिद्ध हैं ।
२ तत्र व्याकरणं पाणिनिः प्रणिनाय ।	२ उनमेंसे व्याकरण (शास्त्र) को पाणिनि बनाता भया ।
३ अन्यानि अपि व्याकरणानि बहूनि सन्ति ।	३ दूसरेभी (अन्योंके बनाये) व्याकरण बहुत हैं ।
४ परंतु पाणिनीयव्याकरणस्यैव सर्वत्र प्रचारः ।	४ तौभी पाणिनिके बनाये व्याकरणकाही सब जगह फैलाव (है) ।
५ शुद्धः शब्दः कः अशुद्धश्च कः इदं व्याकरणेन ज्ञायते ।	५ शुद्ध शब्द कौन और अशुद्ध शब्द कौन, यह व्याकरणसे जाना जाता है ।
६ शब्दो नित्यः, इति व्याकरणशास्त्रस्य सिद्धान्तः महाभाष्ये प्रतिपादितः ।	६ शब्द नित्य, ऐसा व्याकरणशास्त्रका सिद्धान्त पातंजल भाष्यमें प्रतिपादन किया है।
७ न्यायशास्त्रं गौतमः अकार्षीत् ।	७ न्यायशास्त्रको गौतम करता भया ।
८ तत्र सम्यक्तया पदार्थविचारो निरूपितः ।	८ उसमें अच्छी तरहसे पदार्थोंका विवेचन वर्णित है ।
९ तच्छास्त्रस्य अर्थशास्त्रं तर्कशास्त्रं च इत्यपि द्वे संज्ञे स्तः ।	९ उस शास्त्रके अर्थशास्त्र और तर्कशास्त्र ऐसेभी दो नाम हैं।
१० अर्थशास्त्रं कणादेनाऽपि न्यरूप्यत ।	१० अर्थशास्त्र कणाद (मुनि) नेभी बनाया है ।

११ कणादप्रणीतशास्त्रस्य वैशेषिकशास्त्रम् इति नाम वर्तते।

१२ कणादः 'सप्तैव पदार्थाः' इति प्रत्यपादयत्, सप्तभ्यः पदार्थेभ्यः अन्यत् किमपि नास्ति, इति तस्य मतं वर्तते।

१३ 'द्वावेव पदार्थौ' इति गौतमोऽभिहितवान्, द्वाभ्यां पदार्थाभ्याम् इतरत् किमपि नास्ति, इति तस्य राद्धान्तः।

१४ तर्कशास्त्रे जीवेश्वरयोः अन्योन्यं भेदः अखण्डः इति अभिधीयते।

१५ ईश्वरः जगतः कर्ता, इत्यपि तत्र निरूपितम्।

१६ जैमिनिः मीमांसासूत्राणि निबबन्ध।

१७ वाक्यार्थः कथं कर्तव्यः, अयं विषयस्तत्र साङ्गोपाङ्गं प्रत्यपाद्यत।

१८ कर्मकाण्डविवरणं तु अतीवोत्कृष्टमस्ति।

१९ कर्मणैव मुक्तिः भवति, एवं तत्र सिद्धान्तितम्?

११ कणादने बनाये हुए शास्त्रका वैशेषिकशास्त्र ऐसा नाम है।

१२ 'सातही पदार्थ' इस प्रकार कणाद प्रतिपादन करता भया, सात पदार्थोंसे भिन्न कुछभी नहीं है, ऐसा उसका मत है।

१३ 'दोही पदार्थ' इस प्रकार गौतम कहता भया, दो पदार्थोंसे और कुछभी नहीं है, ऐसा उसका सिद्धांत (है)।

१४ तर्कशास्त्रमें जीव ईश्वरका परस्पर भेद अव्याहत (है) ऐसा कहाता है।

१५ जगत्का कर्ता ईश्वर, ऐसाभी उसमें प्रतिपादित है।

१६ जैमिनि मीमांसाके सूत्रोंको रचता भया।

१७ वाक्यका अर्थ कैसा करने योग्य (है), यह विषय उसमें अंगउपांगोंके सहित प्रतिपादन किया है।

१८ कर्मकांडका विवेचन तो बहुत अच्छा है।

१९ कर्मसेही मोक्ष होता है, ऐसा उसमें सिद्धांत किया है।

२० सर्वत्र वाक्यार्थकरणे मीमांसायाः महान् उपयोगः अस्ति ।

२० सब जगह वाक्यका अर्थ करनेके विषे मीमांसाका बडा उपयोग है ।

२१ जैमिनिप्रणीतशास्त्रस्य पूर्वमीमांसा इत्यपि नामान्तरमस्ति ।

२१ जैमिनिने बनाये हुए शास्त्रका पूर्वमीमांसा ऐसाभी दूसरा नाम है ।

२२ वेदान्तसूत्राणि व्यासः न्यबध्नात् ।

२२ वेदांतके सूत्रोंको व्यास रचता भया ।

२३ ब्रह्म सत्यं, जगत् मिथ्या, एवं वेदान्तशास्त्रे सिद्धान्तः कृतः ।

२३ ब्रह्म सत्य (है), जगत् झूठा (है), ऐसा वेदांतशास्त्रमें सिद्धांत किया है ।

२४ यथा तमसि रज्जौ 'अयं भुजंगः' एवं भ्रमो जायते, तद्वत् ब्रह्मणि 'इदं जगत्' इति भ्रमो जायते ।

२४ जैसा अंधकारमें रस्सीपर 'यह साप' ऐसी भ्रांति होती है इस माफिक ब्रह्मपर 'यह जगत्' इस प्रकार भ्रांति होती है ।

२५ नभः इव जले स्थले काष्ठे पाषाणे सर्वत्र ब्रह्म व्यापकम् ।

२५ आकाशसमान जलमें स्थलमें काष्ठमें पत्थरमें सबमें व्यापनेवाला ब्रह्म (है)।

२६ वेदान्तशास्त्रे इतरशास्त्राणां सिद्धान्ताः खण्डिताः ।

२६ वेदांतशास्त्रमें अन्य शास्त्रोंके सिद्धांत खंडन किये हैं ।

२७ जीवेश्वरयोः अन्योन्यं भेदो नास्ति ।

२७ जीव और ईश्वरका परस्पर भेद नहीं है ।

२८ ब्रह्म आनन्दात्मकं वर्तते ।

२८ ब्रह्म आनंदरूपी है ।

२९ वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रतिपाद्योर्थः ।

२९ वेदांत याने उपनिषदोंने प्रतिपादन किया हुआ अर्थ।

३० वेदान्तशास्त्राध्ययनं मोक्षप्रदम्, इति प्रसिद्धम् ।

३० वेदांतशास्त्रका पढना मुक्ति देनेवाला है, ऐसा प्रसिद्ध है।

३१ सांख्यशास्त्रस्य कर्ता कपिलमुनिः अस्ति ।

३२ प्रकृतिः एव अस्य जगतः कर्त्री, पुरुषस्तु कमलपत्रवत् निर्लेपः ।

३३ अन्यशास्त्रवत् सांख्यशास्त्रस्य लोके अध्ययनप्रचारो नास्ति ।

३४ योगशास्त्रप्रणेता पतञ्जलिः ।

३५ प्राणायामः इंद्रियनिग्रहः समाधिः इत्यादयः कथं कर्तव्याः, तत्र योगशास्त्रे निरूपितम् ।

३६ सर्वथा ब्रह्मचिन्तनोपयोगि योगशास्त्रम् ।

३७ शास्त्राध्ययनेन बुद्धिः तीक्ष्णा भवति ।

३८ पण्डिताः शास्त्रचक्षुषा पश्यन्ति ।

३९ शास्त्रम् अध्यापनेन दृढीभवति ।

४० अवश्यं शास्त्रम् अध्येतव्यम् ।

४१ इति शास्त्रोपदेशः संपूर्णः ।

३१ सांख्यशास्त्रका बनानेवाला कपिल ऋषि है ।

३२ मायाही इस जगत्की करनेवाली, पुरुष तो कमलपत्रके नाई अलिप्त है ।

३३ इतर शास्त्रोंके समान सांख्यशास्त्रके पढनेका फैलाव लोकमें नहीं है ।

३४ योगशास्त्रका कर्ता पतंजलि।

३५ प्राणका निरोध इंद्रियोंका रोकना समाधि इत्यादि कैसे करने योग्य हैं, वह योगशास्त्रमें कहा है ।

३६ सब प्रकारसे ब्रह्मविचारके उपयोगी योगशास्त्र (है)।

३७ शास्त्रके पढनेसे बुद्धि तीक्ष्ण (सूक्ष्म) होती है ।

३८ विद्वान् शास्त्ररूपी नेत्रसे देखते हैं ।

३९ शास्त्र पढानेसे तैयार होता है ।

४० शास्त्र अवश्य पढने योग्य है।

४१ इस प्रकार शास्त्रोंका उपदेश पूर्ण हुआ ।

पुस्तकोपदेशः १३.

संस्कृत.	हिंदी.
१ कालिदासनामा कविः रघुवंशकाव्यं निर्मितवान् ।	१ कालिदास नामक कवि रघुवंश काव्यको निर्माण करता भया ।
२ भवभूतिना उत्तररामचरितं नाम नाटकं प्रणीतम् ।	२ भवभूतिने उत्तररामचरित नामक नाटक बनाया है ।
३ दण्डिना दशकुमारचरितं व्यरचि ।	३ दंडि (कवि) ने दशकुमार चरित बनाया ।
४ मल्लिनाथविपश्चिता पञ्चमहाकाव्योपरि व्याख्या निरमायि ।	४ मल्लिनाथपंडितने पंच महाकाव्योंके ऊपर टीका निर्माण की ।
५ प्रभाकरशास्त्रिणा विष्णुनामसहस्रोपरि सरलार्थप्रभाकरीसमाभिख्या व्याख्या अनुष्टुप्श्लोकैः विरचिता ।	५ प्रभाकरशास्त्रीजीने विष्णुनामसहस्रके ऊपर सरलार्थप्रभाकरी नाम टीका अनुष्टुप् श्लोकोंसे बनाई ।
६ इयं शंकराचार्यमतानुकूला वर्तते ।	६ यह शंकराचार्यके मतानुकूल है ।
७ रम्भाशुकसंवादस्य चित्प्रभाकरीनामिका टीका च निर्मिता ।	७ और रंभाशुकसंवादकी चित्प्रभाकरी नामक टीका बनाई है ।
८ इयं बालबोधार्थं सरला अति विस्तृता चास्ति ।	८ यह बालबोधके अर्थ सरल और बहुत विस्तारवाली है ।
९ अयं बालसंस्कृतप्रभाकरोऽपि तेनैव शास्त्रिणा बालोपकारार्थं निरमायि ।	९ यह बालसंस्कृतप्रभाकरभी तिसी शास्त्रीजीने बालोंपर उपकार करनेके लिये बनाया है ।

१० संप्रति शिवनामसहस्रस्य व्याख्यां कर्तुमिच्छति ।

११ सर्वसाहित्यलाभे चम्पूरामायणव्याख्यामपि करिष्यति ।

१२ बालसंस्कृतप्रभाकरस्य संस्कृतान्तःप्रवेशिका इत्यपि नामान्तरं वर्तते ।

१३ प्रभाकरशास्त्रिणा स्तोत्रार्तिक्यादिग्रन्थाः बहवो निर्मिताः ।

१४ एतदध्ययनेन विद्यार्थिनः संस्कृतपटवः भवेयुः ।

१५ साधारणसंस्कृतज्ञाः अपि व्यवहारोपयुक्तान् शब्दान् जानीयुः ।

१६ किंच बहूनां विषयाणां ज्ञानमपि भवेत् ।

१७ अस्मिन् ग्रन्थे बहुविधा विषयाः प्रतिपादिताः सन्ति ।

१८ यदा छात्राणाम् इदं पुस्तकं प्रियं भवेत् तदा ग्रन्थकृत् आत्मपरिश्रमं सफलं जानीयात् ।

१९ अयं बालसंस्कृतप्रभाकरः विद्यार्थिभिः अवश्यं संग्रही-

१० हालमें शिवनामसहस्रकी टीका करनेके वास्ते चाहता है ।

११ सब सामग्रीका लाभ होनेपर चंपूरामायणकी टीकाभी करेगा ।

१२ बालसंस्कृतप्रभाकरका संस्कृतांतःप्रवेशिका ऐसाभी दूसरा नाम है ।

१३ प्रभाकरशास्त्रीने स्तोत्र आर्तिक्य आदि बहुत ग्रंथ निर्माण किये हैं ।

१४ इसके पढनेसे विद्यार्थी लोग संस्कृत भाषामें चतुर होवें ।

१५ साधारण संस्कृत भाषाको जाननेवालेभी व्यवहारोपयोगी शब्दोंको जानेंगे ।

१६ और बहुत विषयोंका ज्ञानभी होवे ।

१७ इस ग्रंथमें बहुत प्रकारके विषय प्रतिपादन किये हैं ।

१८ जब यह पुस्तक विद्यार्थी लोगोंको प्यारा होवे, तब ग्रंथकार अपने श्रमको सफल समझेगा ।

१९ यह बालसंस्कृतप्रभाकर विद्यार्थी लोगोंको अवश्य

तव्योऽस्ति, इति विद्वांसः कथयन्ति ।	संग्रह करने योग्य है, इस प्रकार विद्वान् लोग कहते हैं।
२० गीर्वाणभाषाभिज्ञैरपि अवश्यं संग्रहणीयः, इति पण्डितानां मतं वर्तते ।	२० संस्कृत जाननेवालोंकोभी अवश्य संग्रह करना चाहिये, ऐसा पंडितोंका मत है ।
२१ एवं पुस्तकोपदेशः समाप्तः अभूत् ।	२१ इस प्रकार ग्रंथोंका उपदेश समाप्त हुआ ।

मुद्रणागारोपदेशः १४.

संस्कृत.	हिंदी.
१ मुम्बापुर्याः निकटे कल्याणाभिधा नगरी प्रसिद्धा वर्तते ।	१ मुंबई शहरके नजदीक कल्याण नामक शहर प्रसिद्ध है ।
२ तत्र श्रीकृष्णदासात्मजो गङ्गाविष्णुः लक्ष्मीवेङ्कटेश्वराख्यं मुद्राणागारं प्रतिष्ठापितवान् ।	२ तहां श्रीकृष्णदासका पुत्र गङ्गाविष्णु लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर नामक छापेखानेको प्रतिष्ठित करता भया ।
३ स्वकीयं श्रीवेङ्कटेश्वरमुद्रणालयं स्वानुजाय प्रदत्तम् ।	३ अपना श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना अपने भाईको दिया।
४ अस्मिल्लँक्ष्मीवेङ्कटेश्वराख्यमुद्रणागारे प्राचीनतराः ग्रन्थाः मुद्रिताः ।	४ इस लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर छापेखानेमें बहुत प्राचीन ग्रन्थ छपे गये हैं ।
५ संस्कृतटीकासहिताः भाषाटीकासहिताश्च ग्रन्थाः सम्प्रति संमुद्र्यन्ते ।	५ संस्कृतटीकासहित और भाषाटीकासहित ग्रंथ अभी छपे जाते हैं ।
६ नानाविधानि बहूनि पुस्तकानि विक्रयाय सज्जानि सन्ति।	६ अनेक तरहकी बहुत पुस्तकें बेचनेके लिये तैयार हैं ।
७ सर्वेषां पुस्तकानां मूल्यमपि उचितं स्थापितम् ।	७ सब पुस्तकोंकी कीमतभी योग्य रक्खी है ।

८ यदि कश्चित् अस्मिन् मुद्रणागारे पुस्तकार्थं मूल्येन साकं पत्रिकां प्रेषयेत् तर्हि स्वस्थाने एव झटिति पुस्तकानि प्राप्नुयात् ।

९ पुस्तकप्रेषणे कथमपि विलम्बो न भवति ।

१० कश्चिदपि ग्रन्थो भवतु स चाऽत्र प्राप्यते ।

११ काव्यचम्पूनाटककोशादिग्रन्थाः तथा सर्वे शास्त्रग्रन्थाश्च प्राप्यन्ते ।

१२ भाषाग्रन्थास्तु बहुतराः विद्यन्ते ।

१३ अत्र मुद्रितानां पुस्तकानां शुद्धिविषये सर्वत्र प्रसिद्धिः वर्तते ।

१४ संस्कृतपुस्तकानि शास्त्रिणः शोधयन्ति, भाषापुस्तकानि तु भाषापण्डिताः शोधयन्ति ।

१५ अक्षरयोजनशालायाम् अक्षरयोजकाः, मुद्राऽक्षराणि संयोजयन्ति, एतत् निरीक्षताम् भवान् ।

८ यदि इस छापेखानेमें कोई पुस्तकोंके वास्ते कीमतके साथ चिट्ठीको भेजेगा तो अपने स्थानपरही शीघ्र पुस्तकोंको पा सकेगा ।

९ पुस्तक भेजनेके विषे किस तरहसेभी देर नहीं होती ।

१० कोईभी ग्रंथ हो वह यहां मिल जाता है ।

११ काव्य, चंपू, नाटक, कोश आदि ग्रन्थ और सब शास्त्रोंके ग्रंथ मिल जाते हैं ।

१२ भाषाके ग्रंथ तो अति बहुत हैं ।

१३ यहां छपे हुए पुस्तकोंकी शुद्धिके विषे सब जगह प्रसिद्धि है ।

१४ संस्कृत पुस्तकोंको शास्त्री लोग शुद्ध करते हैं, भाषापुस्तकोंको तो भाषापण्डित शुद्ध करते हैं ।

१५ अक्षरजोडनेकी शाला (कंपाजिटरखाते) में अक्षर जमानेवाले (कम्पाजिटर) छापेके अक्षरों (टाईप) को जमाते (कम्पोज करते) हैं, उसे तू देख ।

१६ पृष्ठगुच्छाः बहुविधाः सन्ति।

१६ सफोंके गुच्छे (फार्म)बहुत प्रकारके हैं ।

१७ कश्चित् षट्पृष्ठात्मकः, कश्चित् अष्टपृष्ठात्मकः, कश्चित् द्वादशपृष्ठात्मकः इत्यनेकप्रकाराः पृष्ठगुच्छाः भवन्ति।

१७ कोई छः सफोंका, कोई आठ सफोंका, कोई बारह सफोंवाला ऐसे अनेक प्रकारवाले सफोंके गुच्छ होते हैं ।

१८ मुद्रणयन्त्रे एकस्यां घटिकायां बह्व्यः प्रतिकृतयः निष्पद्यन्ते ।

१८ छापेके यंत्र (प्रेस या मशीन) में एक घडीमें बहुत कापियां निष्पन्न होती हैं।

१९ अक्षरयोजनाय अक्षराधानिकायां मुद्राक्षराणि स्थापयन्ति ।

१९ अक्षर जमाने (कम्पोज करने) के वास्ते केसमें छापेके अक्षरोंको रखते हैं ।

२० पुस्तकबन्धकाः पुस्तकानि बध्नन्ति ।

२० पुस्तक बांधनेवाले (बुकबाइंडर) पुस्तक बांधते हैं ।

२१ अक्षरोत्पादकयन्त्रे बहूनि अक्षराणि प्रतिदिनं संभवन्ति।

२१ अक्षर करनेके यंत्रमें प्रतिदिन बहुत अक्षर उत्पन्न होते हैं।

२२ अस्य मुद्रणागारस्य विशालतरं पुस्तकालयं वर्तते ।

२२ इस छापेखानेका पुस्तकालय बहुत बडा है ।

२३ पुस्तकग्राहकैः " श्रीकृष्णदासात्मजो गङ्गाविष्णुः, लक्ष्मीवेङ्कटेश्वरमुद्रणयंत्रं, कल्याण-मुंबई." इति स्थलं विलिख्य पत्रं प्रेष्यम् ।

२३ पुस्तक लेनेवाले लोगोंने " गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर छापाखाना, कल्याण-मुम्बई. " इतना ठिकाना लिखकर चिट्ठी भेजनी चाहिये ।

२४ इति मुद्रणागारोपदेशः संपूर्णः ।

२४ ऐसा छापेखानेका उपदेश पूर्ण हुआ ।

शब्दसंग्रहोपदेशः १८.

मानव–पु. मनुष्य[1].
पुरुष–पु. आदमी.
स्त्री–स्त्री. औरत.
ललना–स्त्री. दुलारी.
महिषी–स्त्री. पटरानी.
अध्यूढा–स्त्री. सवति.
कुलस्त्री–स्त्री. कुलवंती.
कुमारी–स्त्री. कुँवरी.
तरुणी–स्त्री. जवानि.
पत्नी–स्त्री. व्याही स्त्री.
स्नुषा–स्त्री. पतोहू, पुत्रबहू.
असती–स्त्री. छिनारि.
विधुर–पु. रंडुआ.
विधवा–स्त्री. रांड, बेवा.
सखी–स्त्री. सहेली.
पतिवत्नी–स्त्री. सोहागिन, अहिवातिन.
वृद्धा–स्त्री. बूढी.
आभीरी–स्त्री. अहीरिन.
अर्य्याणी–स्त्री. बनियाइन.
क्षत्रिया–स्त्री. क्षत्रियाइन.
उपाध्याया–स्त्री. पढानेवाली.
रमणी–स्त्री. खेलने या खेलानेवाली.
जातापत्या–स्त्री. सौरीहि.
नग्निका–स्त्री. नङ्गी.
सैरंध्री–स्त्री. लौंडी, सेवकिन.
वारस्त्री–स्त्री. पतुरिया.
कुट्टनी–स्त्री. कुटणी,
गर्भिणी–स्त्री. गाभिणी.
पुनर्भू–स्त्री. उढरी.
दिधिषु–पु. उढरीपति.
पैतृष्वसेय–पु. बूआ वा फूफीका बेटा.
मातृष्वसेय–पु. मासी वा मौसी का बेटा.
वैमात्रेय–पु. सौतेली माका बेटा.
भिक्षुकी–स्त्री. भिखारिनी.
पुत्र–पु. बेटा.
कन्या–स्त्री. बेटी.
पितृ–पु. बाप.
मातृ–स्त्री. मा.
भगिनी–स्त्री. बहिन.
ननांद–स्त्री. ननद.

---

१ इन संस्कृत शब्दोंका सामान्य लिंगनिर्देश किया है, उसकी परिभाषा–पु.–पुँल्लिंग, स्त्री.–स्त्रीलिंग, न.–नपुंसकलिंग, त्रि.–त्रिलिंग, ऐसी समझनी चाहिये। और विद्यार्थियोंको ये अर्थसहित संस्कृत शब्द कंठगत करने चाहिये।

पौत्री-स्त्री. पोती, नातिनि.
यातृ-स्त्री. देवरानी, जेठानी.
भ्रातृजाया-स्त्री. भौजाई.
मातुली-स्त्री. मामी.
श्वश्रू-स्त्री. सासु.
श्वशुर-पु. ससुर.
पितृव्य-पु. काका, चाचा.
मातुल-पु. मामा.
श्याल-पु. शाला, सार.
देवृ-पु. देवर.
भागिनेय-पु. भैने, भांजा.
जामातृ-पु. दामाद.
पितामह-पु. आजा.
प्रपितामह-पु. परआजा.
मातामह-पु. नाना.
सपिंड-पु. भाई बंधु, जाति.
सोदर्य-पु. सगा भाई.
सगोत्र-पु. गोती भाई.
पति-पु. दुलहा.
भ्रात्रीय-पु. भतीजा.
भ्रातरौ-पु. द्वि. बहिन भाई.
मातापितरौ-पु. द्वि. मा-बाप.
श्वश्रूश्वशुरौ-पु. द्वि. सासु-ससुर.
जायापती-पु. द्वि. स्त्री-पुरुष.
जरायु-पु. झरी, खेढी, जेर.
वैजनन-पु. जन्ममास.
षंढ-पु. हिजरा.
बाल्य-न. लडकपन.
यौवन-न. जवानी.
वृद्धत्व-न. बुढापा.
पलित-पु. न. अतिबुढापा.
जरा-स्त्री. बुढाई.
डिंभा-स्त्री. दूध पीनेवाला बच्चा.
बाल-पु. बच्चा.
युवन्-पु. जवान पुरुष.
वृद्ध-पु. बूढा पुरुष.
वर्षीयस्-पु. अतिबूढा पुरुष.
अग्रज-पु. ज्येष्ठ भाई.
अनुज-पु. छोटा भाई.
दुर्बल-पु. दुबला.
मांसल-पु. बलगर.
तुंदिल-पु. त्वँदार, बडे पेटवाला.
अवटीट-पु. नकचपटा.
केशव-पु. अच्छे केशवाला.
वलिभ-पु. सिमटे चामवाला.
पोगंड-पु. विकल अंगवाला.
खर्व-पु. वामन.
खरणस-पु. तीखी नाकवाला.
विग्रह-पु. नकटा.
खुरणस-पु. लंबी या चिपटी नाकवाला.
प्रज्ञु-पु. दूर दूर जांघवाला.
ऊर्ध्वज्ञु-पु. ऊंची जांघवाला.
संज्ञु-पु. मिली जांघवाला.
बधिर-पु. बहिरा.
कुब्ज-पु. कुबडा.

कुणि–पु. टूटा.
पृश्नि–पु. छोटे अंगवाला.
श्रोण–पु. पंगुला.
मुंड–पु. मुडुआ.
केकर–पु. कं (कुं) जा.
खोड–पु. लंगडा.
कालक–पु. लहसना.
तिलकालक–पु. तिलवाला.
अनामय–न. अरोगीपन.
चिकित्सा–स्त्री. इलाज.
भेषज–न. ओषध.
गद–पु. रोग, व्याधि.
क्षय–पु. क्षयरोग.
प्रतिश्याय–पु. पीनस, नाकरोग.
क्षुत्–स्त्री. छींक.
कास–पु. खांसी.
शोथ–पु. सूजन.
विपादिका–स्त्री. व्यवाई.
किलास–न. सेहुंआं.
पामा–स्त्री. खाजु.
कण्डूया–स्त्री. खजुआना.
विस्फोट–पु. फोडा.
व्रण–पु. न. घाव.
नाडीव्रण–पु. नसूर.
कोठ–पु. कोढ.
कुष्ठ–न. श्वेतकुष्ठ.
अर्शस्–न. ववासीर.
विबंध–पु. कब्जुज.

प्रवाहिका–स्त्री. संग्रहणी.
वमथु–पु. उच्छार, उलटी.
विद्रधि–स्त्री. व्यराथिआ.
मेह–पु. प्रमेह.
भगन्दर–पु. इस नामका रोग.
अश्मरी–स्त्री. मूत्रकृच्छ्र, कर्क.
चिकित्सक–पु. वैद्य, हकीम.
पादवल्मीक–पु. हाडारोग.
केशघ्न–पु. चांईचूंई.
निरामय–त्रि. रोगरहित.
ग्लान–त्रि. रोगसे दुःखी.
व्याधित–त्रि. रोगी.
पामन–त्रि. खँसरावाला.
दद्रुण–त्रि. दादवाला.
अर्शस–त्रि. ववासीरवाला.
वातरोगिन्–त्रि. बाईवाला.
अतिसारकिन्–त्रि. सितरसी.
पिल्ल–त्रि. चोंधरी.
उन्मत्त–त्रि. पागल.
श्लेष्मल–त्रि. कफी.
न्युब्ज–त्रि. कुबडा.
तुण्डिभ–त्रि. तुंदला.
सिध्मल–त्रि. सेहुंअहां
अन्ध–त्रि. अंधा.
मूर्च्छित–त्रि. मूर्छित.
रेतस्–न. वीर्य.
मायु–पु. पित्त.
श्लेष्मन्–पु. कफ.

त्वचा—स्त्री. चाम, खाल.
पिशित—न. मांस.
उत्तप्त—न. सूखा मांस.
रुधिर—न. रक्त.
अग्रमांस—न. कलेजा.
हृदय—न. हृदय.
मेदस्—न. चर्बी.
मन्या—स्त्री. गलेकी पिछली नस.
नाडी—स्त्री. नाडी.
तिलक—न. तिल.
मस्तिष्क—न. गूदा.
किट्ट—न. कान आदिका मल.
अन्त्र—न. आंत.
गुल्म—पु. पिलही.
स्नायु—स्त्री. नस.
कालखंड—न. कलेजा विशेष.
लाला—स्त्री. लार, थूंक.
दूषिका—स्त्री. कींचर.
मूत्र—न. मूत
उच्चार—पु. गुह.
कर्पर—पु. कपार.
अस्थि—न. हाड.
कंकाल—पु. पिंजरा, पांजर.
कशेरुका—स्त्री. रीर, रीढ.
करोटी—स्त्री. खोपडी.
पर्शुका—स्त्री. पंशुडी.
प्रतीक—पु. अंग.
गात्र—न. देह.
प्रपद—न. पैरकी अगाडी.
अंघ्रि—पु. पांव, पैर.
गुल्फ—पु. न. टकना.
पार्ष्णि—पु. एडी.
जंघा—स्त्री. जांघ.
जानु—पु. न. घुटुनू.
ऊरु—पु. निरोंह.
वंक्षण—पु. घुटुनू, टेहुनी.
अपान—न. गुदा.
बस्ति—पु. स्त्री. मूत्रस्थान.
कटि—स्त्री. कमर.
नितंब—पु. स्त्रीका चूतर.
जघन—न. पेडू.
कुकुन्दर—न. नितंबका गडहा.
स्फिच्—स्त्री. कुल्ला.
उपस्थ—पु. भग या लिंग.
भग—न. योनि.
मेढ्र—पु. लिंग.
वृषण—पु. अंड, पेल्हर.
त्रिक—न. मेंकड.
उदर—न. पेट.
स्तन—पु. कुच, चूंची.
चूचुक—पु. न. चूंचीकी ढेपुनी.
क्रोड—न. स्त्री. कोरां, गोद.
वक्षस्—न. छाती.
पृष्ठ—न. पीठ.
स्कंध—पु. कंधा.
जत्रु—न. हंसुली.

कक्ष–पु. कांख.
पार्श्व–पु. न. बगल.
मध्यम–पु. न. मध्यशरीर, कमर.
भुज–पु. बांह.
कूर्पर–पु. गांठि; कोहनी, केहुनी.
प्रगंड–पु. गांठिके ऊपरका भाग.
प्रकोष्ठ–पु. गांठिके नीचेका भाग.
मणिबंध–पु. प्रकोष्ठ और हाथकी संधि.
करभ–पु. करभ.
पाणि–पु. हाथ.
तर्जनी–स्त्री. अंगूठेके पासकी अंगुली.
अंगुष्ठ–पु.
प्रदेशिनी–स्त्री.
मध्यमा–स्त्री.
अनामिका–स्त्री.
कनिष्ठा–स्त्री.
(अंगूठा आदि क्रमसे अंगुरियोंके ये नाम हैं ।)
कररुह–पु. नख, नह.
वितस्ति–पु. स्त्री. बित्ता, बिलस्त.
प्रहस्त–पु. खुला हाथ, चटकना.
संहतल–पु. दुहत्था चटकना.
अंजलि–पु. अंजुरी.
हस्त–पु. हाथ.
मुष्टि–स्त्री. मूठी.
सरत्नि–पु. स्त्री. मुंडा हाथ.
अरत्नि–पु. न. कानी अंगुलीको छोड मुठीसहित हाथ.

व्याम–पु. फैला हाथ.
कंठ–पु. कंठ, नटई, गटई.
ग्रीवा–स्त्री. गला.
घाटा–स्त्री. घांटी.
वदन–न. मुख, मुंह.
नासिका–स्त्री. नाक.
ओष्ठ–पु. होंठ.
चिबुक–न. दाढी.
कपोल–पु. गाल.
हनु–पु. स्त्री. कनपटी.
रदन–पु. दांत.
तालु–न. तालू.
रसना–स्त्री. जीभ.
सृक्कि–न. होठका किनारा.
ललाट–पु. भाल.
भ्रू–स्त्री. भौंह.
कूर्च–पु. न. भौंहोंका बीच.
तारका–स्त्री. आंखका तिल.
लोचन–न. आंख.
अश्रु–न. आंसु.
अपांग–पु. आंखका किनारा.
कटाक्ष–पु. आंखके किनारेसे देखना.
श्रोत्र–न. कान.
उत्तमांग–न. शिर.
कच–पु. बाल.
कैशिक–न. बालोंका झुंड.
अलक–पु. टेढे बाल.

भ्रमरक–पु. ललाटपर झुके बाल.
काकपक्ष–पु. जुलुफी.
कबरी–स्त्री. पठिया.
धम्मिल्ल–पु. जूरा.
शिखा–स्त्री. चोटी.
जटा–स्त्री. जटा.
वेणी–स्त्री. लुटुरी.
शीर्षण्य–पु. निर्मल सुंदर केश.
तनूरुह–पु. न. रोम.
श्मश्रु–न. मोछ.
नेपथ्य–न. अलंकारकी शोभा.
अलंकरिष्णु–त्रि. अलंकार करनेवाला.
मंडित–त्रि. अलंकारयुत.
भूषा–स्त्री. शृंगार.
आभरण–न. गहना.
किरीट–पु. न. मुकुट.
चूडामणि–पु. चोटीकी मणि.
तरल–पु. हारके बीचकी बडी मणि.
पारितथ्या–स्त्री. चोटीकी सोनेकी पट्टी.
ललाटिका–स्त्री. बंदी, टीका.
कर्णिका–स्त्री. कर्णभूषण, तर्की.
कुंडल–न. कुंडल.
ग्रैवेयक–न. कण्ठी, कण्ठा.
ललंतिका–स्त्री. लंबी कण्ठी.
प्रालंबिका–स्त्री. सोनेकी लंबी कंठी.
उरःसूत्रिका–स्त्री. मोतियोंसे गुथी कंठी.
मुक्तावली–स्त्री. मोतियोंका हार.
शतयष्टिक–पु. मोतियोंके सौ लरका हार.
वलय–पु. न. पहुँची.
केयूर–पु. न. बाजूबंद.
ऊर्मिका–स्त्री. अंगूठी.
अंगुलिमुद्रा–स्त्री. मोहर करनेकी अंगूठी.
कंकण–पु. न. कंकण, कडा.
मेखला–स्त्री. स्त्रियोंकी करधनी.
शृंखल–त्रि. पुरुषोंकी करधनी.
मंजीर–पु. न. पायजेब.
किंकिणी–स्त्री. घुंघुरू.
वाल्क–त्रि. अलसी आदिसे बने वस्त्र.
कार्पास–त्रि. कपाससे बने वस्त्र.
कौशेय–त्रि. रेशमसे बने वस्त्र.
रांकव–त्रि. पशुरोमसे बने वस्त्र.
तंत्रक–त्रि. कोरा वस्त्र.
उद्गमनीय–न. धोये वस्त्र.
पत्रोर्ण–न. धोये रेशमी वस्त्र.
दशा–स्त्री. दशी.
आयाम–पु. लंबाई.
परिणाह–पु. चौडाई.

पटच्चर–न. पुराना कपडा.
कर्पट–पु. फटा या चिथडा वस्त्र.
वसन–न. वस्त्रमात्र.
पट–पु. न. अच्छे वस्त्र.
वराशि–पु. न. मोटे वस्त्र.
निचोल–त्रि. ओहार.
अंतरीय–त्रि. देहके अधोभागमें पहरनेका वस्त्र धोती आदि.
प्रावार–पु. अंगौछा.
चोल–पु. स्त्री. अंगिया, चोली.
नीशार–पु. रजाई, ओढना.
चंडातक–पु. न. लहंगा.
आप्रपदीन–त्रि. लंबा लहंगा.
उल्लोच–पु. चंदवा.
दूष्य–न. तंबू.
जवनिका–स्त्री. कनात.
परिकर्मन्–न. रोलीआदिसे अंग-संस्कार.
मार्जना–स्त्री. पोंछना.
उद्वर्तन–न. उबटन.
स्नान–न. नहाना.
चर्चा–स्त्री. चंदन आदिका लेपन.
विशेषक–पु. न. तिलक.
अग्निशिख–न. कुंकुम.
लाक्षा–स्त्री. लाख.
देवकुसुम–न. लवंग.
जायक–न. पीतचन्दन.
अगुरु–पु. न. अगुरु.
यक्षधूप–पु. राल.
वृकधूप–पु. धूप.
पिंडक–पु. लोहबान.
मृगमद–पु. कस्तूरी.
कक्कोलक–न. कबाबचीनी.
घनसार–पु. कर्पूर, कपूर.
चन्दन–पु. न. चन्दन.
रक्तचंदन–न. रक्तचन्दन.
जातिफल–न. जायफल.
विलेपन–न. सुगंधद्रव्यका उबटन.
भावित–त्रि. वासित (वस्तु).
स्रज्–स्त्री. माला.
शेखर–पु. चोटीकी पहिरी माला.
उपबर्ह–पु. तकिया.
शय्या–स्त्री. बिछौना.
पर्यंक–पु. पलंग.
कंदुक–पु. गेंद.
दीप–पु. दीया.
पीठ–न. पीढा.
संपुटक–पु. डब्बा, चौघडा.
पतद्ग्रह–पु. पीकदान.
कंकतिका–स्त्री. कंघी.
पिष्टात–पु. बुकवा.
आदर्श–पु. दर्पन, सीसा.
व्यजन–न. पंखा, बेना.
पशु–पु. पशु.
मृगेंद्र–पु. सिंह.
शार्दूल–पु. बाघ.

तरक्षु–पु. चीता.
वराह–पु. सूअर.
प्लवग–पु. बंदर.
भल्लुक–पु. भालू, रीछ.
गंडक–पु. गैंडा.
महिष–पु. भैंसा.
शिवा–स्त्री. भेडिया, सिआर.
बिडाल–पु. बिलार.
गौधेर–पु. गोहका बच्चा.
श्वावित्–पु. साही.
वातमृग–पु. जलदी चलनेवाला एक जातिका हरिण.
कुरंग–पु. हरिण.
शरभ–पु. लडीसरा.
गवय–पु. नीलगाह.
शश–पु. शसा, खरहा.
आखु–पु. चूहा.
सरट–पु. गिरगिट.
मुसली–स्त्री. छिपकली.
लूता–स्त्री. मकरी, मकडी.
नीलंगु–पु. छोटे कीडे.
शतपदी–स्त्री. कनखजूरा,गोजर.
शूककीट–पु. केंचुआ.
अलि–पु. बीछू.
पारावत–पु. कबूतर.
शशादन–पु. बाज.
उलूक–पु. उल्लू.
भरद्वाज–पु. भरदूल, लवा.
खंजन–पु. खंडरिच.
कंक–पु. उजली चील्ह.
चाष–पु. नीलकंठ.
कलिंग–पु. भुजंगा.
शतपत्रक–पु. कठफोरवा.
चातक–पु. चातक.
कुक्कुट–पु. मुर्गा.
चटक–पु. गंवरैया, गंवरा.
चटका–स्त्री. गंवरी.
कर्करेटु–पु. कौडिला.
कृकण–पु. मुआचिडी.
पिक–पु. कोयल.
करट–पु. कौआ.
द्रोणकाक–पु. डोम कौआ.
दात्यूह–पु. काला कौआ.
पिल्ल–पु. चील्ह.
गृध्र–पु. गीध.
शुक–पु. सुग्गा, तोता.
क्रौंच–पु. कराकुल.
बक–पु. बगला.
सारस–पु. सहरस.
कोक–पु. चकवा.
कलहंस–पु. बत्तक.
कुरर–पु. कुररी.
हंस–पु. हंस.
राजहंस–पु. राजहंस.
वरटा–स्त्री. हंसकी स्त्री.
लक्ष्मणा–स्त्री. सहरसकी स्त्री.

जतुका–स्त्री. चमगुदरी.
तैलपायिका–स्त्री. गीदड.
वर्वणा–स्त्री. मक्खी.
सरघा–स्त्री. मधुमक्खी.
वनमक्षिका–स्त्री. डांस, मच्छर.
दंशी–स्त्री. मसा.
गंधोली–स्त्री. बर्रै (भिर्रे).
झिल्लिका–स्त्री. झींगूर.
शलभ–पु. फनिगा.
खद्योत–पु. सोनकीडा.
मधुकर–पु. भंवरा.
मयूर–पु. मोर, मुरैला.
केका–स्त्री. मोरकी बोली.
मेचक–पु. मोरपंखके चिह्न.
शिखंड–पु. मोरका पंख.
खग–पु. चिडिया.
हारीत–पु. हारिल.
तित्तिरि–पु. तीतर.
कुक्कुभ–पु. वनमुर्गा.
लाव–पु. लवा.
कोयष्टिक–पु. टिटहरी.
वर्तक–पु. बटेर.
पक्ष–पु. पंख.
पक्षति–स्त्री. पंखकी जड.
चंचु–स्त्री. चोंच.
प्रडीन–न. उडना.
अंड–न. अंडा.
कुलाय–पु. घोंसला.
डिंभ–पु. बच्चा.
मिथुन–न. जोडा.
युगल–न. दो.
निवह–पु. समूह, झुंड.
मतंगज–पु. हाथी.
शुंडा–स्त्री. सूंड.
श्वन्–पु. कुत्ता.
अश्व–पु. घोडा.
मेष–पु. भेंडा.
वृषभ–पु. बैल.
उष्ट्र–पु. ऊंट.
अज–पु. बकरा.
रासभ–पु. गदहा.
भक्त–पु. न. भात.
सूप–न. दाल.
कृशरा–स्त्री. खिचडी.
तापहरी–स्त्री. ताहरी.
पायस–न. खीर.
समिता–स्त्री. सैंमई.
मंडक–पु. मंडा.
पोलिका–स्त्री. पुरी, लुची.
रोटिका–स्त्री. रोटी.
लप्सिका–स्त्री. सीरा.
अंगारकर्कटी–स्त्री. अंगाकर, लिट्टी.
पिष्टिका–स्त्री. पिठी.
वेढमिका–स्त्री. वेढई.
पर्पट–पु. पापड.
पूरिका–स्त्री. कचोडी.

वटक–पु. बडा, मगोरा.
क्वथिता–स्त्री. कढी.
वटिका–स्त्री. पकोरी.
संयाव–पु. गूझा.
फेनिका–स्त्री. फैनी.
मोदक–पु. लड्डू.
कुंडलिनी–स्त्री. जलेबी.
बिंदुमोदक–पु. बुंदीके लड्डू.
रसाला–स्त्री. सिखरन, श्रीखंड.
शर्करोदक–न. सरवत.
झर्झर–पु. झंझरी.
प्रपानक–न. पना.
कांजीक–न. कांजी.
जालि–स्त्री. जाली.
शक्तु–पु. सत्तु.
धाना–स्त्री. बहुरी.
लाज–पु. खील.
पृथुक–पु. चिउरा, चिरमुरा.
होलक–पु. होला.
उंबी–स्त्री. उंबी.
कुल्माष–पु. घूंघनी.
पलल–न. तिलकुट.
पिण्याक–न. पीना.
दुग्ध–न. दूध.
पीयूष–न. फेरुस.
किलाटक–पु. खोवा.
क्षीरशाक–न. खिरिसा.
मोरट–न. फटे दूधका जल.
संतानिका–स्त्री. मलाई.
फेन–न. झाग.
दधि–न. दही.
नवनीत–न. मक्खन.
घृत–न. घी.
तक्र–न. छाछ.
धान्य–न. धान.
व्रीहि–पु. साठी, सामान्य धान्य.
शालि–पु. शालि (चावल).
गोधूम–पु. गेहूं.
यव–पु. जव.
शिंबा–स्त्री. शेंगरी, कलाई.
मुद्ग–पु. मूंग.
माष–पु. उडद.
राजमाष–पु. राना उडद.
चणक–पु. चना.
मसूरिका–स्त्री. मसूर.
निष्पाव–पु. मोठ.
सतीनक–पु. मटर.
कुलत्थ–पु. कुलथी.
तिल–पु. तिल.
तुवरी–स्त्री. अरहर.
अतसी–स्त्री. अलसी.
वरटा–स्त्री. कर्र, करड.
सर्षप–पु. सरस.
शण–पु. शण.
श्यामाक–पु. श्यामक.
कोद्रव–पु. कोदव.
नीवार–पु. तीनी.
यावनाल–पु. ज्वार.

गवेधुका–स्त्री. स्यंहूआ, चेना.
कणिश–पु. न. बालि.
सुवर्ण–न. सोना.
रजत–न. चांदी.
ताम्र–न. तांबा.
कांस्य–न. कांसी.
पीतलोह–न. पीतल.
रंग–न. रांगा.
जसद–न. जसद.
सीस–न. सीसा.
लोह–न. लोहा.
पारद–पु. पारा.
अभ्रक–न. भोडर.
गंधक–पु. गंधक.
माक्षिक–न. सोनामक्खी.
हरिताल–न. हरताल.
गैरिक–न. गेरु.
तुत्थ–न. नीलाथोथा.
कासीस–न. हीराकसीस.
हिंगुल–न. सिंगरफ.
सिंदूर–न. सिंदूर.
सौवीरांजन–न. सुरमा.
रसांजन–न. रसौत.
शिलाजतु–न. शिलाजीत.
काक्षी–स्त्री. फिटकडी.
फेन–पु. झाग.
विद्रुम–पु. मूंगा.
मौक्तिक–न. मोती.
माणिक्य–न. लाल.
सूर्यमणि–पु. सूर्यकांत.
चन्द्रमणि–पु. चंद्रकांत.
गोमेद–न. पन्ना.
हीरक–पु. हीरा.
नीलमणि–पु. लसणिया.
मारकत–न. मरकतमणि.
शुक्ति–स्त्री. सीप.
अयस्कांत–पु. लोहचुंबक.
काच–पु. कांच.
रस–पु. रस.
कषाय[1]–पु. तुवर, कषैला.
मधुर–पु. मीठा
लवण–पु. नमकीन.
कटु–पु. चर्चरा.
तिक्त–पु. कडुआ.
अम्ल–पु. खट्टा.
शाक–न. साग.
वास्तुक–न. वंथुआ.
पोतकी–स्त्री. पोई.
मारिष–पु. मरसा.
भंडीर–पु. चौलाई.
छुरिका–स्त्री. पालक.
नाडिक–न. नाडीका साग.

---

१ कषाय आदि छः (६) रस रसमात्रमें वर्तमान पुँल्लिंग हैं। और जब रसवानोंमें वर्तमान हैं तब तीनोंमें हैं ।

पट्टशाक–पु. पटुआ.
कलंबी–स्त्री. कलंबी.
लोणी–स्त्री. नोनिया.
घोटिका–स्त्री. बडी नोनिया.
चांगेरी–स्त्री. चांगेरी, अंबिलोना.
चुक्रिका–स्त्री. चूका.
चंचुकी–स्त्री. चंचु.
ब्राह्मी–स्त्री. हुलहुल.
शितिवार–पु. शिरिआरी.
द्रोणपुष्पी–स्त्री. गोमा.
यवानी–स्त्री. अजमायन.
दद्रुघ्न–पु. चकवड, पमाड.
सेहुंड–पु. थूहर.
गोजिह्वा–स्त्री. गोभी.
पटोल–पु. परवल.
गुडूची–स्त्री. गिलोय.
वृंताक–न. बैंगन, भंटा.
पिंडार–न. पिंडार.
कर्कोटकी–स्त्री. खेखसा, ककोडा.
डिंडिश–पु. ढेंडस, टिंडे.
डोडिका–स्त्री. करेरुआ.
कंटकारी–स्त्री. कटेरी.
सूरण–पु. सूरन.
आलुक–न. आलू.
पलांडु–पु. प्याज.
मूलक–न. मूली.
गृंजन–न. गाजर.
वट–पु. बड.
पिप्पल–पु. पीपल.

पारिश–पु. पारसपीपल.
उदुंबर–पु. गूलर.
काकोदुंबरिका–स्त्री. कटुंबर.
प्लक्ष–पु. पिलखन.
कदंब–पु. कदंब.
अर्जुन–पु. कौह.
शिरिष–पु. शिरस.
वंजुल–पु. वेतस.
निचुल–पु. जलवेतस.
श्लेष्मातक–पु. ल्हेशवा.
पीलु–पु. पीलु.
शाक–पु. शाकवनु.
सर्जरस–पु. शाल.
तमाल–पु. तमाल.
खदिर–पु. खैर.
किंकराल–पु. बबूल.
बीजक–पु. विजयसार.
तिनस–पु. तिनस.
बहुपुट–पु. भोजपत्र.
पलाश–पु. ढाक.
धव–पु. धव.
धन्वन–पु. धामणि.
सर्ज–पु. शोजा.
शाखोट–पु. शाकोट.
वरुण–पु. वरना.
जिंगिणी–स्त्री. जीवण.
शल्लकी–पु. शालक.
तापसद्रुम–पु. हिंगोट.
कटंभर–पु. कटाहा.

मुष्कक–पु. मोषा.
पारिभद्र–पु. पहाडी नींब.
शाल्मलि–पु. स्त्री. सेमर.
तुणि–पु. तुनि.
सप्तपर्ण–पु. सातला.
हारिद्रक–पु. हरिद्रु.
नक्तमाल–पु. करंज.
तिरिच्छि–पु. तिरगिछी.
शमी–स्त्री. जांठी.
टिंठिणी–पु. झिंझिणी.
अरिष्टक–पु. रीठा.
शिंशपा–स्त्री. शीसम.
मुनिद्रुम–पु. अगस्त.
कदली–स्त्री. केला.
दाडिमी–स्त्री. अनार.
बदरी–स्त्री. बडबेरी.
द्राक्षा–स्त्री. दाख.
आम्र–पु. आम.
नारिकेल–पु. नारियल.
पनस–पु. कटहल.
ताल–पु. ताड.
एला–स्त्री. इलायची.
बीजपूर–पु. बिजौरा.
नागरंग–पु. नारंगी.
निंबुक–न. नींबू.
चिंचा–स्त्री. इमली.
कपित्थक–पु. कैथ.
क्रमुक–न. सुपारी.
तांबूलवल्ली–स्त्री. नागरपान.

अव्ययानि.

चिराय–बहुकाल.
मुहुस्–बारंबार.
झटिति–जलदी.
ऋते–विना (वर्जन).
जातु–कदाचित् (किसी काल).
सार्धम्–साथ.
मुधा–व्यर्थ.
उत–या (वा).
तिरस्–टेढा.
समया–समीप.
सहसा–अकस्मात्.
पुरस्–आगे.
ईषत्–किंचित् (अल्प).
इव–तुल्य.
तूष्णीम्–चुपचाप.
सपदि–तत्काल.
अंतरा–बीच.
दिष्ट्या–बहुत अच्छा(आनंद).
प्रसह्य–हठसे.
साम्प्रतम्–योग्य.
शश्वत्–निरंतर.
नहि–नहीं.
न–नहीं.
अलम्–बस.

ओम्–हां (अंगीकार).
समन्ततस्–चारों ओर.
यथायथम्–यथायोग्य.
मृषा–झूठ.
वै–निश्चयसे.
प्राक्–पहले (भूतकाल).
अर्वाक्–पीछे.
नीचैस्–नीचे.
उच्चैस्–ऊंचे.
प्रायस्–बहुताई.
शनैस्–धीरे धीरे.
बहिस्–बाहर.
अन्तर्–अंदर.
पुनर्–फिर.
अद्य–आज.
पूर्वेद्युस्–पूर्वदिन.
उभयेद्युस्–दोनों दिन.

परेद्यवि–परदिन.
ह्यस्–गतदिन (कल).
श्वस्–आनेवाला दिन (कल).
परश्वस्–परसों.
तदा–तब.
एकदा–एक समय.
सदा–सब दिन.
यदा–जब.
अधुना–अब.
मा–मत.
अपि–भी.
एव–ही.
तथापि–तोभी.
यथा–जैसा (जिस प्रकार).
तथा–तैसा (तिस प्रकार).
एवम्–ऐसा (इस प्रकार)

परीक्षोपदेशः १६.

१ विपदाऽभिभूतोऽपि नाहं धर्मं त्यजेयम् ।
२ आत्मोत्कर्षं तथा परेषां निंदां धीरः परिवर्जयेत्
३ परमादरेण महात्मनां यशांसि दिक्षु प्रतन्वंति कवयः ।
४ प्रत्यहं प्रातरुत्थायोपवनं च गत्वा पुष्पाण्यवचिनोमि ।

१ अपना वक्त खराब न करो।
२ क्या वह यह काम कर सकेगा ?
३ हमारे प्रास छूहारा अंगूर और अनार है ।
४ अगर यह सहीभी हो तो इससे हमें क्या मतलब ?

१ इन संस्कृतवाक्योंका हिंदी और हिंदीवाक्योंका संस्कृत भाषांतर परीक्षार्थ विद्यार्थियोंसे कराना.

५ दुःखपीडितामपि मां हृदयमर्मच्छिद्भिर्वचनैः किं पुनर्दुनोषि ।

६ हे जगन्नायक, न वयं चर्मचक्षुषा तव विभूतिमुपवीक्षितुं शक्नुमः ।

७ हे संजय, कुरुक्षेत्रे मामकाः पाण्डवाश्च किमकुर्वत तत्कथय ।

८ उद्यमं कुर्वन्नपि फलं नैवाप्नवं, तस्माद्भवितव्यतैवात्रोपालभ्या ।

९ अस्मिन्दुर्भिक्षे धान्यं न लभ्यते, ततः किमश्नाम कथं च जीवितं धारयाम ।

१० शृणुत रे पौराः । अयं वसन्तसेनाघातकश्चारुदत्तो वधस्तंभं नीयते, तद्यदीदृशं कर्म केऽपि कुर्वीरन्दण्डमप्येतादृशं प्राप्नुयुः ।

११ जाड्यं धियो हरति, सिञ्चति वाचि सत्यं, मानोन्नतिं दिशति, पापमपाकरोति । चेतः प्रसादयति, दिक्षु तनोति कीर्तिं, सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥

५ प्रेमके आगे न्याय अन्याय कुछ थोडेही ठहर सकता है ।

६ जिस आदमीको हम किताब दी थी, वह गैर हाजिर है ।

७ जिसका हाल अच्छा है, वह जो चाहे सो कर सकता है ।

८ भंवर और बगूलेके पास जो जाते हैं उनका नाश होता है ।

९ ऐसी बीमारियोंके इलाजमें जो उनकी राय है उनको तुम मानते हो ?

१० हम लोग तरह तरहकी चीजें पसंद करते हैं, अर्थात् एक चीजसे तृप्ति नहीं होती ।

११ आपने मेरे संबंधमें जो कुछ बात कही है, सो सच है । पर मैं क्या करूं मेरे मनमें किसी तरहसे निष्ठुरता नहीं होती है ।

संस्कृतहिंदीभाषानिपुणाः समदृष्टयोऽनसूयास्ते । विद्वांसोऽस्याः सुकृतेः शुद्धिं कुर्वंतु केवलं कृपया ॥ शकाब्दे षड्धराष्टेंदु [१८१६] मिते मासे तु कार्तिके । पूर्णेयमीशकृपया संस्कृतांतःप्रवेशिका ॥ अस्मान्सुवर्णरहितानवहेलयन्ति चित्ते निवेश्य किमपि ध्रुवमत्र केचित् । पृथ्वीतले खलु भवेद्रसिकस्तु कश्चिदित्याशया प्रचलिता वयमत्र यत्ने ॥

इति श्रीमच्चित्तपावनजातीयगर्गान्वयजकेशवभट्टात्मजयशोदागर्भज–प्रभाकर–विरचितकृतिषु संस्कृतान्तःप्रवेशिकाऽपरपर्यायो बालसंस्कृतप्रभाकरः संपूर्णतामगात् ॥ शिवम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.